विवाह संस्कार है, जश्न नहीं

डॉ. बाबूलाल शर्मा

वेद व्यास कहते हैं कि संसार में मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है:-

गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि, नहि मानुषात्श्रेष्ठवरं हि किंचित।

(महा. शांति 180/12)

अत: मनुष्य से श्रेष्ठत्व की अपेक्षा की जाती है। परन्तु जब स्वार्थान्ध, मदान्ध और धनान्ध होकर वह श्रेष्ठत्व से गिरने लगता है तो उसके आचरण को मानवीय बनाए रखने के लिए सुधार की आवश्यकता होती है। जब लगता है कि जो हम कर रहे हैं उससे समाज के व्यापक हितों का हनन हो रहा है और समाज के निचले स्तर पर लोगों का निर्वाह कठिन हो रहा है तथा सुधार की आवश्यकता अनुभव होती है। सुधार की आवश्यकता समाज के सामान्य वर्ग को सर्वाधिक अनुभव होती है, परन्तु वह अपनी सामान्यता के कारण मुखर नहीं हो पाता। इसके लिए असाधारणता और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। सुधार की बात उठाने पर स्थापित परम्पराओं और सुविधा-सम्पन्न लोगों से टक्कर लेनी होती है। अपनी बात से प्रतिबद्ध रह कर लम्बे संघर्ष के लिए सन्नध रहना पड़ता है और सबसे बड़ी बात यह कि सुधार को स्वयं पर लागू कर दिखाना होता है। धर्म, सम्मान और परम्परा के नाम पर देखा-देखी कुप्रथाएं चलती रहती हैं अथवा सुविधा-सम्पन्न लोग तथा स्वार्थी तत्त्व उन्हें चलाये रखते हैं। प्रवासी राजस्थानियों ने धनबल से कितने ही लोकाचारों, प्रवृत्तियों और कुप्रथाओं को जन्म दिया है जो राजस्थान में भी संक्रमित हो गई हैं।

समाज सुधार की बात चली है तो, मुड़कर इसके इतिहास पर भी एक दृष्टिपात कर लेना ठीक रहेगा। जोधपुर के महाराजा उदय सिंह के दिवंगत होने पर उसके पीछे रानियों के सती होने का दृश्य सम्राट अकबर ने देखा तो उसे बड़ी ग्लानि हुई। उसने हिन्दुओं में प्रचलित इस अमानवीय प्रथा को रोकने का प्रयास किया जो बाद में भी चलता रहा। ब्रिटिश शासन में जब सोच-विचार की नई लहर उठी तो हिन्दुओं में से ही राजा राजमोहन राय, केशवचन्द्र सेन, जस्टिस रानाडे इत्यादि ने सतीप्रथा और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करने तथा विधवा विवाह के लिए समाज सुधार के आन्दोलन चलाए। ब्रिटिश सरकार ने इन कुप्रथाओं के विरुद्ध कानून बनाए जो आजादी के बाद भी जारी हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दुओं में व्याप्त पौराणिक पाखण्डों के विरुद्ध के आवाज बुलन्द कर इसे शुद्ध रूप से वेद-आधारित धर्म घोषित किया। वेद में मूर्तिपूजा और पौराणिक पाखण्डों का निषेध है अत: मूर्तिपूजा तथा उलजलूल पौराणिक किस्सों के नाम पर मजे करने वालों का गिरोह उनके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। मौलवियों-पादरियों के सामने इस गिरोह की बोलती बन्द हो जाती थी जबकि महर्षि दयानंद ने मौलवियों-पादरियों से शास्त्रार्थ कर दीन-हीन हिन्दू धर्म को वैदिक आधार पर पुन: प्रतिष्ठित किया। स्वामीजी ने और उनके अनुययायियों ने सतीप्रथा, बालविवाह, मृत्युभोज, विवाह में दहेज के नाम पर लेन-देन व फिजूलखर्ची के विरुद्ध तथा विधवा विवाह के पक्ष में समाज सुधार का आन्दोलन चलाया। इन आन्दोलनों, कानूनों और नए विचारों से सुधार हुए परन्तु इस रूढ़िग्रस्त हिन्दू समाज की दकियानूसी सोच में आमूल परिवर्तन का कार्य शेष है।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि दहेज अर्थात् दायजा से तात्पर्य पुत्री को पिता द्वारा अपनी सम्पत्ति में से, उपहारों के रूप में दिया जाने वाला दाम है, भात, पेज इत्याद भी इसी रूप में दाय है और इस दाय का पुत्री को अधिकार है, स्मृतियों के अनुसार यह स्त्री धन है। परन्तु वर अथवा वर-पक्ष को विवाह के अवसर पर तिलक, मिलनी, सज्जन-गोठ तथा अन्याय नेगों के नाम पर जो नकदी, वस्त्राभूषण, मिठाइयां इत्यादि दी जाती है अथवा ली जाती है, वह सब उत्कोच (घूस) है। दुर्भाग्य यह है कि जब हम कन्या-पक्ष होते हैं तब सुधारों का समर्थन करते हैं और जब वर-पक्ष होते हैं इसकी जरूरत नहीं समझते।

आजकल विवाह को एक जश्न बना दिया गया है जिसमें देन-लेन, वैभाव प्रदर्शन, सजावट, खान-पान, उछल-कूद, फोटोग्राफी इत्यादि पर जोर रहता है जबकि यह हमारे सोलह संस्कारों में से एक है, परन्तु संस्कार-विधि के प्रति सर्वाधिक उपेक्षा बरती जाती है। षोडश संस्कारों में से अधिकांश को तो हम भूल ही चुके हैं, जो दो-चार संस्कार करवाते हैं उनमें भी यही स्थिति रहती है। अंत्येष्टि संस्कार में सुखसेज का आडम्बर रच कर समझा जाता है वह मृतक को स्वर्ग में मिलेगी। एक सोने की सीढ़ी दी जाती है, कहा जाता है कि मृतक इससे चढ़कर स्वर्ग में पहुंच जायेगा। धार्मिक अन्धविश्वासों, मान्यताओं के नाम पर ऐसी अनगिनत हास्यास्पद मूर्खताएं प्रचलित हैं। वस्तुत: समाज सुधार तभी होगा जब इस तरह की मूर्खताओं पर प्रहार करेंगे और उस मानसिकता को बदलेंगे जो समाज में विकृतियां पैदा करती है। हमें विवेकपूर्ण और तर्कसम्मत होना होगा तभी समाज सुधार संभव है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने अपने राष्ट्रीय चिन्तन शिविर में जिस वैवाहिक आचार-संहिता को प्रस्तावित तथा अनुमोदित किया है वह तभी आचरण में आ सकेगी जबकि इसे प्रस्तावित अनुमोदित करने वाले कार्यकर्ता स्वयं इसे अपनाएं। सामान्यत: यह माना जाता है कि लड़कों वाले दोषी हैं। परन्तु लड़कियों वाले भी कम दोषी नहीं हैं जो धनी वर प्राप्त करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। अच्छे घर-वर का मापदण्ड केवल धन को मान लिया गया है, यह बुराई का मूल है। इस मानसिकता को बदलना होगा। साथ ही वैवाहिक सम्बन्धों के लिए जातीय बंधनों में भी शिथिलता लानी होगी। आर्थिक दृष्टि से उच्च वर्ग ऐसा कर भी रहा है, परन्तु मध्यम वर्ग अपने रूढ़िग्रस्त स्वभाव के कारण मूढ़ बना हुआ है। हमें यह ठीक-ठीक समझना और समझाना होगा कि विवाह एक संस्कार है, जश्न नहीं।

भारतीय विद्या मंदिर, 12/1, नेली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता-700087

SIMPLEX INFRASTRUCTURES LIMITED

FOR ANY TYPE OF PILE FOUNDATION WORK

CAST -IN-SITU DRIVEN, CAST -IN-SITU BORED, PRECAST DRIVEN, PRECAST PRE BOARD, STEEL OR R.C.C. SHEET PILES ETC.

AND

ALL TYPES OF ENGINEERING AND CONSTRUCTION WORKS FOR CIVIL, STRUCTURAL, MARINE, TANKAGES, PIPING, EQUIPMENT ERECTION IN

Power Stations, Road Projects, Fertiliser Projects, Cement Plants, Refinery Constructions, Coal Handling Plants, Paper Mills, R.C.C. or Prestressed Concrete Bridges, Fabrication & Erection of Steel Structures,.Hydrocarbon Storage Tanks and Pipeline, Cross-Country Pipeline, Steel Plant Construction, Multi-storied Building, Micro- Tunneling, BoxJPipe Pushing, HDD, High-rise Silo Structures by Slipform Technique,Bunkers, Jetties, Marine Structures, Deep underground basements, Textile Factories, Effluent TreatmentPlant, Water & Sewage Treatment Plant etc., as well as Turnkey Construction.

AND

For any other type of Industrial and Utility Projects

FOR

Economy, Speed and quality Constructions

Contact :

SIMPLEX INFRASTRUCTURES LIMITED

Foundation, Reinforced & Prestressed Concrete Specialist

REGD. OFFICE

"Simplex House ",
27, Shakespeare Sarani, Kolkata -700017.
Ph: (033) 2301- 1600
Fax : (033) 2283-5964/65/66
Web: www.simplexIndia.com

ADM. OFFICE

12/1, Nellie Sengupta Sarani, Kolkata -700087
Phone: (033) 2252-8371-73-74, I
Fax No: (033)2252- 7595
E.Mail : scpl.cal@smj.sril.in

Branches :

NEW DELH
HEMKUNTH (14th Floor)
89, Nehru Place,
NEW DELHI -110019
Ph:2643-2515,2643-6818
2647-3330 & 2621-9536
Fax No.(011)-2646-5869

MUMBAI
502-A,POONAM CHAMBERS
5 Floor, SHIVSAGAR ESTATE
DR. ANNIE BESANT ROAD
W ORLI
MUMBAI -400018
PH.NO.- 2491-1849/3481/3537
Fax No.(022) 2491- 2735

CHENNAI
NEW NO.57 (OLD NO.38)
PANTHEON ROAD ,
" Eg m o re"
CHENNAI -600008
Ph: 2858-4802/03/04
Fax No.(044) 2858-4805

समाज विकास

जनवरी, 2007
वर्ष 57, अंक 1
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.
संपादक : नंदकिशोर जालान
सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

समाज विकास विचार मंच

"मारवाड़ी समाज की राजनीति में हिस्सेदारी" विषय पर आप अपने स्वतंत्र विचार अपने पूर्ण परिचय एवं फोटो के साथ आगामी 8 अप्रैल तक भेजने का कष्ट करें। ध्यान रहे समय पर आने वाले लेखों पर ही विचार किया जायेगा। -सम्पादक।

क्रमांक

चिट्ठी आई है, पृष्ठ 4 - 6
सम्पादकीय, पृष्ठ - 7
वार्षिक साधारण सभा, पृष्ठ - 8
अध्यक्षीय, पृष्ठ - 9
लघुकथा, कविता, हास्य, पृष्ठ - 10
72वां स्थापना दिवस, पृष्ठ - 11-15
बिहार : रजत जयंती अधिवेशन, पृष्ठ - 16-21
कहानी : पकड़, पृष्ठ - 22-23
टैक्स प्लानिंग..., पृष्ठ - 24
विवाह संस्कार..., पृष्ठ - 26
चिंतन, पृष्ठ - 27
प्रेरणादायक पल, पृष्ठ - 28
गणतंत्र दिवस विशेष, पृष्ठ - 29-30
युगपथ चरण, पृष्ठ - 31-32
सदस्यता फार्म, पृष्ठ - 33
अन्य समाचार, पृष्ठ - 34

चिट्ठी आई है

श्री सीताराम शर्मा के नाम खुला पत्र

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर आपको हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। अध्यक्ष पद पर चुने जाने के पश्चात् आपके द्वारा दिए गये अभिभाषण की एक प्रति 'समाज विकास' सितंबर-2006 के जरिए प्राप्त हुई। महोदय, परिवर्तन के दौर में तमाम मूल्यों का ह्रास हो गया है, ऐसे में मारवाड़ी समाज को अपने आप को ऊंचाई पर बनाये रखने में जिस प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, वह एक चिंता का विषय बन सकता है। आपने जो चिंता व्यक्त की है, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। एक अखिल भारतीय संस्था जो अपनी स्थापना के सात दशक मना रही है, अगर देश भर में बसे करोड़ों मारवाड़ी लोगों के जीवन, रोजगार, उद्योग के प्रति संवेदनशील है तो निश्चित तौर पर यह एक आनंद का विषय है। देश भर में रह रहे आठ करोड़ मारवाड़ी और हरियाणवी लोग ज्यादातर व्यापार एवं रोजगार में कार्यरत हैं। व्यापार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने हवाओं के रुख को बदल दिया है। अब मूल्य आधारित व्यापार नहीं बल्कि समय आधारित व्यापार का बोलबाला है। सरकारी नीतियों में लगातार हो रहे बदलाव से हमारे व्यापार को एक स्थान पर ला कर खड़ा कर दिया है। इसमें कोई शक नहीं है कि यदि हमने अपने व्यापार के तौर-तरीके को समय के साथ नहीं बदला तो वह दिन दूर नहीं कि हम देश के आम नागरिक बन जायेंगे। सम्मेलन द्वारा इस ओर चिंता व्यक्त करना प्रासंगिक है। इसके साथ ही यह सवाल भी उठता है कि ऐसे दौर में सम्मेलन की क्या भूमिका हो सकती है ? क्या सम्मेलन परिवर्तन व्यवस्था के दौरान सभी के समक्ष यह संदेश देने में सक्षम हो पायेगा ? जब धन उपार्जन के तौर-तरीके में नए आयाम जुड़ गए हैं और ऐसे में तमाम व्यापारिक मूल्यों को ताक पर रखा जा रहा है, जब समाज में धन और वैभव का प्रदर्शन मुक्त रूप से होने लगा है तब किसके पास समय है कि वह ऐसे मुद्दे पर विचार करे, जो उसके अस्तित्व के साथ जुड़ा है।

महोदय, सम्मेलन के प्लेटफार्म से हमेशा ही समाज सुधार की चर्चा होती रही है। पर समय के साथ उन निर्णयों का उचित सहयोग के अभाव में क्रियान्वयन नहीं हो पाने पर वे निर्णय काल के गाल में समा गए। सम्मेलन की स्थापना में जो उद्देश्य निहित थे, वे थे समाज का सर्वांगीण विकास करना, बिना भेदभाव, अभावग्रस्त एवं पिछड़े वर्ग के लोगों के आर्थिक, शैक्षणिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास हेतु प्रयत्न करना, सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों के उन्मूलन हेतु प्रयत्न विभिन्न प्रयास करना एवं आपसी विवादों को तय करने के लिए पंचायत बनाना इत्यादि। समाज में शिक्षा का प्रचार और प्रसार जैसे-जैसे हुआ है, लोग अधिक जागरुक हुए हैं। अर्थ के महत्व ने निश्चित तौर पर हमारे समक्ष कुछ नई सामाजिक समस्याओं को जन्म दे दिया है। इसमें सबसे बड़ी समस्या आ रही है हमारे बच्चों के नए वैवाहिक संबंधों का सामान्य रूप से निश्चित न होना। सम्मेलन ने जो नया नारा **'मिलनी सबकी चार रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया'** वह अपनी जगह श्रेष्ठ नारा है। मेरे हिसाब से मिलनी एक ऐसी व्यवस्था है जहां एक समधी अपने अन्य समधियों से मिलकर एक अटूट संबंध स्थापित करता है। यहां चार रुपये की अहमियत है न कि उन मूल्यों की जो कागज के दो नोटों में समाहित है। वैवाहिक समस्या को दूर करने के लिए अब एक बार फिर सम्मेलन को यह बीड़ा उठाया है। इस स्थिति में सम्मेलन को एक अम्ब्रेला संगठन का रोल अपनाना होगा, जो सभी संगठन को एक दिशा-निर्देश दे सके। समाज के विकास के लिए किस तरह के मापदंड तय किए जाने चाहिए, इस पर गहराई से चिंतन करना होगा।

इस तेजी से बदलते परिवेश में अधिकतर मारवाड़ी परिवार के लोग अपने रोजगार की तलाश में और उसको बचाये रखने में व्यस्त हैं। साथ ही उसके समक्ष अपनी पारिवारिक, सामाजिक दायित्व, परंपराएं और संस्कृति के प्रति जिम्मेदारियां है।

महोदय, एक बार पुनः आपको साधुवाद देता हूं कि आपने सम्मेलन के मंच से उन विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया, जिन पर समाज में व्यापक विकृतियां पैदा हुई हैं। आशा करता हूं कि आप के प्रयास से समाज में नव विचारों का जन्म होगा और नव समाज का निर्माण होगा।

-रवि अजितसरिया
फैंसी बाजार, गुवाहाटी

'समाज विकास' नवम्बर 2006 पढ़ा जिसमें कई लक्ष्मीपतियों के नाम का उल्लेख किया गया है। स्व. घनश्याम दास बिड़लाजी ने 1934 में एक किताब लिखी थी। उन्होंने अपने बेटे-पोतों को चेतावनी दी थी कि हमारे पास जो सम्पदा है वो हमारा नहीं वरन देश की धरोहर है। इसको अपने परिवार के लिए उतना ही खर्च करना है जितना निहायत जरूरी हो। फिजूल खर्च करोगे तो समझो कि हम दूसरे के हक को बरबाद कर रहे हैं। एक बार की बात है :-

एक फकीर बादशाह सलामत के दरबार में गया और जाकर बादशाह को बोला- हुजूर, यह एक फकीर की पोटली है, इसको आपके खजाने में सुरक्षित रखवा दीजिये। बादशाह बोला कि तुम्हारी पोटली तो मैं रखवा दूंगा लेकिन इस पोटली को तुम वापस कब लोगे ? फकीर ने कहा कि यह पोटली मुझे वापस मेरी कयामत के समय दे देना। तुरंत बादशाह बोला कि अरे, कैसी बात करते हो तुम ? कयामत के समय तो तुम्हारी देह भी तुम्हारे साथ नहीं जाने वाला है तो फिर इस पोटली को कैसे ले जाएगा ? फकीर ने पूछा, यह बात आप जानते हैं कि कयामत के समय कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है ? बादशाह ने कहा, यह बात मैं तो क्या तमाम दुनिया-जहान जानता है। तब फकीर ने कहा कि तो फिर तुम इस खजाने को जनता से कर वसूल कर किसके लिए भर रहे हो ? बादशाह को समझते देर नहीं लगी और तख्तोताज से उतर कर उस फकीर के पैरों में गिर पड़ा। बादशाह ने कहा आप फकीर नहीं हैं, आप तो उस मालिक के फरिश्ते हैं जो मुझ जैसे अंधे को आँख दे दिया। अब मुझे बताएं मैं क्या करूँ। फकीर ने कहा, अब आगे मैं कुछ नहीं कहूंगा। तुम्हारे जो समझ आवे वो ही कर। बाद में बादशाह ने अपना समुचा

जीवन सादगी से बिताया।

इसलिए मैं लक्ष्मीपतियों से अनुरोध करूंगा कि अपने धन का आप यथा-सामर्थ्य पर उपकार में लगायें ताकि आपका नाम सदियों तक इतिहास में यादगार रहे।

यह पत्र प्रथम बार भेज रहा हूँ इस 77 वर्ष की आयु में। यदि उचित समझें तो इसको समाज विकास में छापने का कष्ट करेंगे, सिर्फ 2-3 क्लास पढ़ा हूँ इसलिए इसको सुधार कर छापने का कष्ट करेंगे।

-भानमल अग्रवाल (सरावगी)

पोस्ट - सालमारी

जिला-कटिहार, बिहार-855113

समाज विकास का अंक कुछ विलम्ब से प्राप्त हुआ। अंक काफी महत्वपूर्ण है। अध्यक्षीय कॉलम में कई बातों की जानकारी दी है। भवन निर्माण आपके प्रथम कार्यकाल में ही हो जाये तो मुझे काफी प्रसन्नता होगी। राष्ट्रीय चिंतन शिविर जैसे आगामी कार्यक्रमों में प्रान्तों से कम से कम पांच सक्रिय लोगों को भी आमंत्रित करें तो शायद ज्यादा अच्छा रहेगा। उद्यमी विकास कार्यक्रम बहुत ही अच्छा कार्यक्रम है इसे व्यापक स्तर पर सफल बनाने के लिए अच्छी तैयारी करनी होगी। 1. सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम में दोनों पक्षों के मेहमानों की संख्या 300 निश्चित होना चाहिए। 2. विवाह कार्यक्रमों में प्रयोग पर पूर्णतः रोक लगनी चाहिए। 3. विवाह समारोहों में नृत्य एवं अन्य कार्यक्रम पंडाल या हॉल के अंदर होना चाहिए एवं आर्केस्ट्रा वगैरह की जगह रामकथा या भजन संध्या का आयोजन होना चाहिए।

अगले वर्ष होने वाले उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब विधानसभा चुनावों में अपने लोगों को विभिन्न राष्ट्रीय पार्टियों से टिकट दिलाकर भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने का आपसे अनुरोध है।

-विनोद अग्रवाल, राजमहल

समाज विकास का दिसम्बर '06 अंक बहुत अच्छा लगा। पढ़ने में बहुत प्रिय, पर आचरण में बहुत कठिन होता महसूस हुआ। कठिन इसलिए नहीं कि संभव नहीं, बल्कि इसलिए कि इसके लिए मानसिकता नहीं।

सामाजिक आयोजनों पर अधिकतर आडम्बर एवं असीमित खर्च की सारी बीमारियां महानगर कोलकाता से ही शुरू हुई है। समाज की सबसे ज्यादा आबादी एवं सबसे धनी लोग कोलकाता में केन्द्रित हैं। स्थिति ऐसी है कि धनी वर्ग खर्च करने के लिए कोई-न-कोई बहाना और मौका ढूंढ़ता रहता है और इस प्रकार नए-नए तथाकथित सामाजिक आयोजन समाज में होने शुरू हो गए हैं। ऐसी स्थिति में सिर्फ "**वैवाहिक आचार-संहिता**" का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। किस-किस आयोजन के लिए आचार-संहिता निर्धारित की जा सकती है? शादियों सहित सभी आयोजनों में तड़क-भड़क एवं भोजन में व्यंजनों की संख्या बढ़ाने की होड़ लगी है जिसमें समाज का बहुत बड़ा धन व्यर्थ कर दिया जाता है। कितना अच्छा हो यदि इस धन का कुछ अंश अन्य सामाजिक हितों के सेवा-कार्यों या सेवा-प्रयोजनों में लगाया जा सके। यदि वास्तव में परिवर्तन करना है तो अवांछनीय तामझाम एवं खर्चीले आयोजनों के विरुद्ध आन्दोलन का रुख अपनाना पड़ेगा, हमारे पूर्वजों की भाँति।

नारायण प्रसाद कोटरीवाला, भागलपुर

वैवाहिक आचार संहिता

समाज विकास के दिसम्बर महीने का अंक प्राप्त हुआ। प्रथम पृष्ठ पर ही वैवाहिक आचार-संहिता पढ़ी। मुझे प्रेरणा मिली कि क्यों न इसे गांव के सभी घरों में पहुंचा दिया जाय और मैंने इस छोटे से 250 घरों के (मारवाड़ी) कस्बे में सभी को इसकी प्रतिलिपि भिजवा दी। जब तक अन्य लोगों की प्रतिक्रिया मुझे मिले मैं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना चाहता हूँ।

1) सज्जन गोठ बंद हों : ये उचित नहीं है। सज्जनगोठ में होने वाले तामझाम बन्द होने चाहिए।

2) सगाई विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें उचित नहीं है। लड़की वालों का भी कर्तव्य बनता है।

3) दोनों पक्ष मिलकर कम से कम खर्च पर विवाह का कार्य करें।

विश्वनाथ अगरवाला

मयूरभंज माचीस फैक्ट्री, पोट रायरंगपुर, उड़ीसा

(श्री विश्वनाथ अगरवाला ने समाज विकास में प्रकाशित वैवाहिक आचार-संहिता का पूरे गांव में वितरित कर सम्मेलन के प्रयासों को जो सहयोग दिया इसके लिए वे धन्यवाद के पत्र हैं। - सम्पादक)

समाज विकास के दिसम्बर '०६ के अंक के मुख्य पृष्ठ पर **वैवाहिक आचार-संहिता** पढ़ा। इससे समाज के मध्यम वर्गीय लोगों को बहुत राहत मिलेगी। साथ में यह भी आवश्यक है संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारीगण खुद के यहां से शुरू कर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करें।

किशनगोपाल पुरोहिता

नागपुर, महाराष्ट्र

समाज विकास का यादगार ७२वां स्थापना दिवस विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषकर समाज के उत्थान हेतु प्रत्येक वर्ग की भावना को ध्यान में रख कर **वैवाहिक आचार-संहिता** के माध्यम से दिशा-निर्देश दिया है, यह वास्तव में प्रशंसनीय व वन्दनीय है।

मारवाड़ी युवक संघ वाराणसी के अध्यक्ष श्री जगदम्बाजी तुलस्यान एवं प्रधानमंत्री श्री दीपक तोदी व पूरे समाज ने सराहा है। आपके सूचनार्थ यहां विवाह करने वाले परिवार को संहिता को समझाते हुए विनम्र निवेदन किया है। मिलनी कागज का चार रुपया लेंगे। मेरा सुझाव है कि हर माध्यम से आचार-संहिता को प्रचारित किया जाना चाहिए।

-रामगोपाल सर्राफ

148, साकेत नगर, वाराणसी

मारवाड़ी सम्मेलन की ९ सूत्रीय वैवाहिक आचार संहिता का सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी

श्री सुदर्शन कुमार बिड़ला द्वारा स्वागत एवं हार्दिक समर्थन

S. K. BIRLA

BIRLA BUILDING
KOLKATA-700001

10.1.07

My dear Sitaramji,

Thank you for sending me a copy of the Marwari Sammelan publication for December. I note that this is your annual issue and I hope all the functions would have gone off well.

On the cover of the issue you have published some suggestions about reform in marriages, particularly in the Marwari community. I entirely agree with you and would like to compliment you on this effort.

This is something which Nand Kishoreji had discussed with me some years ago and I had agreed with him. A number of our senior community leaders also agree in principle, but unfortunately nobody was prepared to take the lead, for a variety of reasons.

It is of course clear that everybody will spend according to his own status and ability. What is objectionable however is the extra-ostentatious expenditure (e.g. 1-1.5 crs. pandals etc.), which not only is a waste of money, which could and should be put to better use. Additionally, this also creates social tensions, which are also sometimes politically exploited.

Therefore, apart from the moral aspects of the whole exercise, following in the footsteps of the community's austere traditions, this aspect could also perhaps be tactfully pointed out.

I wish you all the best,

Yours sincerely,

Shri Sitaram Sharma
Kolkata

श्री सुदर्शन कुमार बिड़ला का सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा को लिखा गया महत्वपूर्ण पत्र।

संपादकीय

पूँजी बाजार अमूल्य धरोहर है!

भारत की अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन देखने को मिल रहा है। विश्व के कई वित्तीय संस्थाओं ने भारतीय उद्योगों में अपनी पूँजी निवेश कर रहे हैं, जबकि भारत एक प्रगतिशील देश की श्रेणी में आता है। इसके बावजूद भारत की उद्यमशीलता पर,विश्व का झुकाव नई बात नहीं है, अंग्रेजी हुकूमत के समय भी भारत विश्व बाजार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुका है। पिछले चार-पांच दशकों में भारत की अर्थनीति ने भारत को पिछली पंक्ति में ला खड़ा किया था, राजनीतिकरण भले कुछ भी रहा हो, परन्तु यह सत्य है कि आज भारत के प्रत्येक प्रान्त अब पुराने विचारधाराओं को त्याग कर उद्योग व विकास के मार्ग पर अग्रसर होने की दौड़ में लगे हैं, जहां एक तरफ वाम विचारधारा के लोग विरोधाभास के बावजूद बंगाल में नये-नये उद्योगों की स्थापना पर बल देने लगे हैं वहीं बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा व राजस्थान जो पिछड़े राज्यों की श्रेणी में आते हैं वहां भी परिवर्तन की लहर है। इस लहर के साथ-साथ पूंजी बाजार ने भी नई ऊंचाइयों छू, नित्य नया रिकार्ड दर्ज कराने में लगी है। केन्द्रीय करों में कई गुणा आमदनी दर्ज की गयी, ब्याज की दरें स्थिर होने लगी, कृषि आधारित उद्योग पनपने लगे, विदेशों में हमारे उद्योगों का महत्व समझा जाने लगा है। बैंकिंग क्षेत्र अच्छा कार्य करने लगी, बीमा एवं संचार के क्षेत्रों में रोज नये परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं, इन्टरनेट के माध्यम से खरबों का कारोबार पलकों में होने लगा। **परन्तु एक बात भारत के उद्योगपतियों को मान लेना चाहिए कि वे जो उद्योग लगा रहे हैं भले ही वे इसके प्रबन्धक हैं, वे यदि पूंजी बाजार से धन ले रहे हैं तो, निवेशकों को धोखा देने की मानसिकता को त्याग कर कार्य करें, वास्तव में उद्योगों के लाभ का हिस्सा, उनके मजदूर व निवेशक ही हैं, जिन्हें अलग कर अपने लाभ की बात सोचना आत्मघाती होगा।** आज भारत के सैकड़ों उद्योगों ने अच्छी प्रगति की है, परन्तु यह भी सच है कि कई उद्योगपति पूंजीबाजार का नाजायज लाभ लेने के लिए गलत आंकड़े प्रस्तुत करने में लगे हैं, उससे हमें सावधान रहना होगा। खासकर मारवाड़ी समाज का कोई वर्ग इस तरह के आंकड़े प्रस्तुत कर समाज की छवि को खराब न करें, इसके लिए सतर्क होने की जरूरत है। पूंजी बाजार एक अमूल्य धरोहर है जो हमारे समाज के युवा वर्ग को आने वाले दिनों में खड़ा कर सकता है इसके लिए समाज के प्रत्येक उद्योगपतियों को पूंजी बाजार पर विश्वास कायम करने की जरूरत पर बल देना चाहिए।

जहां एक तरफ भारत के प्रत्येक प्रान्त विकास की राह पर अग्रसर होने को प्रयासरत है वहीं देश के कुछ हिस्सों में विदेशी ताकतों के हाथ हमारे युवक हिंसा करने में लिप्त हैं यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि केन्द्र के तमाम प्रयासों के बावजूद ऐसी ताकतें हिंसक वारदातों को अंजाम देने में सफल रही है। देश को विभाजन करने की ऐसी ताकतें एक समय पंजाब में यह प्रयोग कर चुकी है जहां वे बुरी तरह नाकाम रहे हैं, अब भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को निशाना बनाया जा रहा है, ऐसी ताकतों से निपटने के लिए स्पष्ट नीति का होना जरूरी है। वार्ता का अर्थ यह कदापि नहीं होना चाहिए कि हम ऐसी ताकतों को मजबूत करने का अवसर पर प्रदान करें। जहां देश के अन्दर हम ऐसी ताकतों को एकजुट हो मुंहतोड़ जवाब देना है, वहीं नेपाल में भी नेपाली मारवाड़ी समाज के साथ हो रही घटनाओं के प्रति भी हम चिन्तित हैं। नेपाल सरकार को चाहिए कि वे नेपाल में 200 वर्षों से रम-बस गये हिन्दुस्तानी समाज को उपर्युक्त सुरक्षा प्रदान करें। वे सभी नेपाली हैं, उन्हें नेपाली नागरिक की तरह ही वे सभी सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए जो एक आम नेपाली को प्राप्त है।

अर्थव्यवस्था की बात का पुनः उल्लेख करते हुए यह कहना चाहूँगा कि भारत कृषि प्रधान देश है, कृषकों की हित की रक्षा किए बगैर, भारत सम्पूर्ण विकास की तरफ नहीं बढ़ सकता है। आज भी कृषकों को ऋण ऊँचे ब्याज दर पर मिल रहा है, जबकि उद्योगों के ऋणों का पुनःआकलन किया जा रहा है। **कृषक हमारे देश में सोना पैदा करते हैं, हमारी अर्थव्यवस्था का 80% हिस्सेदारी उनके योगदान से चलती है,** उनको दी जाने वाली धन राशि को ब्याजमुक्त तो कर ही देना चाहिए, साथ ही समय पर ऋण लौटाने वाले कृषकों को कुछ प्रतिशत ऋण भी माफ किया जाना चाहिए। देश में टैक्स के रूप में प्राप्त अरबों की धनराशि का एक हिस्सा कृषकों के ऊपर एवं इनको शिक्षित करने पर भी खर्च किया जाना चाहिए।

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

वार्षिक साधारण सभा

सम्मेलन सभापति का २ वर्षों में १ लाख सदस्य बनाने का आह्वान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा रविवार २१ जनवरी २००७ को सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में सम्मेलन भवन में हुई।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया द्वारा गत वर्ष २००५-०६ का आय-व्यय का लेखा एवं संतुलन पत्र प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी कि सम्मेलन में प्रत्येक वर्ष करीब २ लाख से अधिक का घाटा है एवं वर्तमान में ११-१२ लाख रुपयों का एकत्रित घाटा या कमी है। ''समाज विकास'' प्रकाशन के मद में भी कुछ कमी रहती है जिसके लिए श्री कानोड़िया ने सदस्यों से विज्ञापन-सहयोग की अपील की। श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल ने आर्थिक स्थिति को सुधारने पर जोर देते हुए कतिपय सुझाव दिये एवं तत्पश्चात सर्वसम्मति से गत वर्ष के एकाउण्ट्स पारित किये गये।

सम्मेलन के महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार ने गत वर्ष अप्रैल २००५ से मार्च २००६ तक के कार्यकलापों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कोषाध्यक्ष श्री कानोड़िया के प्रस्ताव पर मेसर्स पी. के. लीला एण्ड कं. को पुनः लेखा परीक्षक नियुक्त किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि नयी कार्यकारिणी समिति ने आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए प्रयास आरम्भ किये हैं जिसके फलस्वरूप पिछले ६ महीनों में १०-११ लाख रुपये के विज्ञापन समाज विकास के लिए एकत्रित किये गये हैं एवं आजीवन सदस्यों के शुल्क को बैंक में फिक्सड डिपॉजिट के रूप में कराना आरम्भ कर दिया गया है एवं इस मद में करीब ६५ हजार रुपये जमा किये गए हैं। इस जानकारी का सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

अध्यक्ष श्री शर्मा ने सम्मेलन के सदस्यों कीसंख्या १ लाख के घोषित लक्ष्य को प्राप्त करने का आह्वान करते हुए कहा कि इस ओर सदस्यता उप-समिति श्री आत्माराम सोंथलिया की अध्यक्षता में सक्रिय है एवं एक कार्यक्रम तैयार कर रही है। उन्होंने विभिन्न उप-समितियों के सुचारू रूप से कार्य करने की जानकारी देते हुए कहा कि राजनैतिक चेतना समिति की श्री जुगल किशोर जैथलिया की अध्यक्षता में कार्य हो रहा है एवं शीघ्र ही प्रांतीय स्तर पर बैठकें आरम्भ की जायेगी। मारवाड़ी सम्मेलन भवन उप-समिति राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री कानोड़िया की अध्यक्षता में कार्य कर रही है एवं फरवरी माह में बिल्डिंग प्लान जमा देने की योजना है। मारवाड़ी सम्मेलन को इनकम टैक्स की ८० जी धारा के अन्तर्गत शामिल करने का प्रस्ताव रखा गया जिस पर कोषाध्यक्ष श्री कानोड़िया ने आवश्यक जानकारी प्राप्त कर कार्यवाही का आश्वासन दिया। श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने इसके लिए अपनी सेवायें अर्पित की।

सदस्यता उप-समिति की बैठक

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सदस्यता उप-समिति की बैठक श्री आत्माराम सोंथलिया की अध्यक्षता में १९ जनवरी २००७ को सम्पन्न हुई। बैठक में सदस्यता अभियान कार्यक्रम के विषय में विस्तृत बातचीत हुई जिसमें श्री विश्वनाथ भुवालका, श्री ओम लडिया, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री लोकनाथ डोकानिया, श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, श्री बालकृष्ण माहेश्वरी आदि ने महत्वपूर्ण सुझाव दिया।

यह निर्णय लिया गया कि सदस्यता अभियान का श्री गणेश जनसम्पर्क के माध्यम से कोलकाता के साल्टलेक क्षेत्र से आरम्भ किया जाये। उप-समिति ने सम्मेलन से मारवाड़ी सम्मेलन के परिचय सम्बन्धी साहित्य मुहैया कराने का निवेदन किया।

उप समिति ने सुझाव दिया कि सम्मेलन के संरक्षक संबंधी प्रावधान में परिवर्तन कर उसकी राशि एक लाख रुपये तय की जाये। सभी उप-समिति के सदस्यों से ५ नये सदस्य बनाने का अनुरोध किया गया जिसमें कम से कम एक आजीवन सदस्य हो। बैठक में सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा एवं महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार भी उपस्थित थे।

अर्थशास्त्री प्रो. रामगोपाल अग्रवाल का व्याख्यान

सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं विश्व बैंक के पूर्व वरिष्ठ पदाधिकारी प्रोफेसर (डा.) राम गोपाल अग्रवाल अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के निमंत्रण पर आगामी बृहस्पतिवार ८ फरवरी २००७ को ''पारिवारिक व्यवसाय एवं खुली बाजार आर्थिक व्यवस्था की चुनौतियां'' विषय पर व्याख्यान देंगे।

कलकत्ता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। इंग्लैंड से पी.एचडी की। विश्व बैंक में विभिन्न उच्च पदों पर रहे। चीन में विश्व बैंक के प्रमुख आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्य किया। २००१ में लिखी उनकी चीन पर पुस्तक बहुत अधिक चर्चित रही जिसमें उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि २०२० तक चीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरेगा।

डा. अग्रवाल ने ताजा भविष्यवाणी की है कि भारत २०५० तक चीन एवं अमेरिका से बड़ी आर्थिक ताकत बन जायेगा, लेकिन भारत की महानता सिर्फ आर्थिक ताकत के रूप में नहीं बल्कि एक भिन्न स्वस्थ जीवनशैली के रूप में स्थापित होगी।

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

अध्यक्षीय

२९ जनवरी २००७

बहनों एवं भाईयों

''देश के विकास में मारवाड़ी समाज का अभूतपूर्व योगदान रहा है'' - ये शब्द हैं भारत की लोकसभा के अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी के जो कोलकाता के खचाखच भरे कला मन्दिर सभागार में २५ दिसम्बर २००६ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७२वें स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित वैवाहिक आचार संहिता की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं सम्मेलन के राजनैतिक चेतना कार्यक्रम को ''भारतीय गणतंत्र'' की सफलता के लिए अति आवश्यक बताया।

९ सूत्रीय वैवाहिक आचार संहिता को सर्वभारतीय एवं सर्व-स्तर पर अद्भुत स्वागत एवं समर्थन प्राप्त हुआ है। मारवाड़ी समाज के सिरमौर बिड़ला घराने के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री सुदर्शन कुमार बिड़ला ने सम्मेलन को एक पत्र में लिखा :- ''मैं आप द्वारा प्रस्तावित आचार संहिता से पूर्णतया: सहमत हूँ और आपको साधुवाद देना चाहता हूं। विवाहों में दिखावा एवं आडम्बर न सिर्फ धन की बर्बादी है साथ ही यह समाज में तनाव पैदा करती है जिसका कभी-कभी राजनैतिक दुरुपयोग भी होता है।'' समाज श्री बिड़ला के नेतृत्व की कामना करता है।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का रजत जयन्ती अधिवेशन १३ जनवरी २००७ को मुंगेर में आयोजित हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल ने पदभार ग्रहण किया। बिहार सम्मेलन हमारा एक महत्वपूर्ण प्रांतीय संगठन है। मुंगेर अधिवेशन में मैंने अपील की है कि सम्मेलन के सदस्यता अभियान में बिहार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाये, राष्ट्रीय सम्मेलन को एक नयी ताकत प्रदान करें।

असम में बढ़ती हिंसा देश एवं समाज के लिए चिन्ता का विषय है। विघटनकारी एवं आतंकवादी ताकतें देश की एकता के लिए खतरा पैदा करती है। कानून-व्यवस्था एवं आम नागरिकों के जान-माल की सुरक्षा सरकार की जिम्मेवारी है। सम्मेलन स्थिति पर नजर रखे हुए हैं एवं विभिन्न स्तर पर हमने अपनी आशंका एवं चिंता से अधिकारियों को अवगत कराया है।

सभी घोषित कार्यक्रमों-सम्मेलन भवन निर्माण, राजनैतिक चेतना शिविर, सदस्यता अभियान, नये प्रांतीय सम्मेलनों का गठन, उच्च शिक्षा कोष, उद्यमी प्रशिक्षण कार्यक्रम, आदि पर तेजी से काम करना है। इस ओर मुझे आप सभी के सहयोग एवं समर्थन की आवश्यकता है। सबसे बड़ी प्राथमिकता है संगठन को सुदृढ़ एवं मजबूत करना। **मारवाड़ी सम्मेलन को समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करने के लिए हमें अपनी सदस्य संख्या को २००८ तक बढ़ाकर कम से कम १ लाख तक ले जाना है। मेरी आप सभी से अपील एवं प्रार्थना है कि आप अपने गांव, कस्बे, शहर से कम से कम ५ नये सदस्य बनाने की कृपा करें जिसमें से कम से कम १ आजीवन सदस्य हों। समाज विकास के इस अंक में सदस्यता-पत्र प्रकाशित किया गया है, आप उसकी फोटो कॉपी कर उपयोग कर सकते हैं। आपका सम्मेलन को यह बहुत बड़ा अनुदान एवं समर्थन होगा। मैं व्यक्तिगत रूप से आपका आभारी रहूंगा।**

समाज विकास आपका मुखपत्र है। अपने सुझाव, विचार, गिला-शिकवा, शिकायत, प्रशंसा सब लिख भेजें। आपके पत्र हमारी ताकत बढ़ाते हैं। आपसी बातचीत ही समाज को जोड़ती है। नववर्ष आपके एवं आपके परिवार के लिए शुभ एवं मंगलमय हो, इस शुभकामना के साथ, सादर,

आपका

सीताराम

(सीताराम शर्मा)

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

लघुकथा

शायद यही ज़िंदगी है !

कहाँ थे इतनी रात गए? घर में प्रवेश करते ही, सीमा ने गोपाल को धमकाते और कुछ शक की निगाहों से देखते हुए प्रश्न किया।

गोपाल निरुत्तर सा उसको देखने लगा, मन में कई सवाल एक साथ उठने लगे।

पूरा शरीर थक कर चूर-चूर था, साथ ही ट्रेन हादसे के चलते भितरी चोट भी कहर बरपा रही थी, सर दर्द अलग से, ओह सीमा के इस तरह के व्यवहार ने उसे अंदर से काफी विचलित कर दिया था।

एकाएक गोपाल सीमा पर चिल्ला पड़ा, मर गया था!

बस, अच्छा बहाना है, जवाब देने का-

सीमा ने फिर नया शब्द बाण चलाया-

पता नहीं किस कलमुंही के साथ मुंह काला कर के आए हो, जरा छू क्या दिया, आग बबूले हो गए, पड़े रहते उसी के पास, घर आने की जरूरत ही क्या थी?

बस रहने भी दो, बहुत हो गया, खाना लगा दो।

अपने आप पर नियंत्रण कर गोपाल ने बातें बदलने का प्रयास किया।

खाना टेबुल पर पड़ा है, साथ ही व्यंग कसते हुए, एक बाण और दाग दिया, और कितना खाओगे?

तुम्हारा कहने का मत.....लब।

रास्ते की घटना गोपाल की आँखों के सामने अब तक तैर रही थी।

भगवान को शुक्रिया किस तरह करें, गोपाल यह सोच भी नहीं पाया था कि सीमा के शब्दों ने उसे झकझोर के रख दिया।

मन को स्थिर कर, सीमा को बताना ही चाह रहा था कि

देखो! आज बड़ी दुर्घटना....

बस...बस...! बहुत हो गया.... रहने दो,

मुझे नहीं सुनना, तुम्हारी दोगली बातें,

खाना खा लेना..... बोलते हुए गोपाल के शब्द पूरे होने से पूर्व ही सीमा कमरे में चली गई।

अब तक, गोपाल एकदम से शांत हो चुका था।

आँखों के सामने एक तरफ टेबूल पर रखी खाने की थाली, और सामने दीवार पर टँगी माताजी की तस्वीर, जैसे गोपाल को कुछ आदेश दे रही हो।

रात कैसे गुजर गई, पलक झपकते ही, पता भी नहीं चला।

सुबह के आठ बज गए थे, सीमा ने बरामदें से गोपाल को आवाज दी,

अजी! सुनते हो! देखो.... रात को कितनी बड़ी दुर्घटना हो गई!

कई लोग मारे गए,

पता है मुझे, गोपाल ने शांत स्वर में जवाब दिया।

क्या - वह अवाक हो गोपाल को देखने लगी... क्या तुम भी?

हाँ मैं भी।

गोपाल के उत्तर ने सीमा को काठ सूंधा दिया हो मानो,

गोपाल ने आँखों झुकाते हुए कहा.... एक कप चाय दोगी? प्लिज....

हाँ अभी लाई..... बोलती हुई सीमा किचन की तरफ चली गई-

शायद यही जिंदगी है।

-शंभु चौधरी

एफ.डी.-453, साल्टलेक सिटी, कोलकाता-700106

कविता

लिछ्मी काकी

लिछ्मी काकी-
अवकाले री बरसात न्मे
सूरत री सूरत ही बिगाड़ दी
मुंबई में फेरुं सड़का पर नाव चालगो।
और तो और आंतकिया भी कहर ठहा दियो
ट्रेन में बम विस्फोट कर कै कइंया नै मौत रै घाट उतार दियो।
बाड़मेर नै बाढ़मेर बणा कै
म. प्र. अर राजस्थान में भी जल प्लावन रो
सीन दिखा दियो।
जठै बरसतो कोनीं, बठै अबूतो बरसगो
जठै खूब बरसतो, बठै रो मानखो पाणीं खातर तरसगो
तेरी भी लीला अपरम्पार है काकी।
इतणों बड़ो देस जो सत्य अर अहिंसा रो हामी है
आतंकवादियां री चपेट में आ रैयो है,
रक्षक ही भक्षक बण, जनता पर भारी है
बाड़ ही खेत नै खारी है।
इण बगत देस में–
लोकतंत्र रा च्ययारुं खंभा हाल रैया हैं
कोई कहंको ठिकाणों कोनीं
देस आपरी मन मरजी सूं चाल रैयो है।
तेरै सूं अरदास है काकी,
झूठी नेतागिरी, दादागिरी अर चमचागिरी–
री राफड़ मेट, देस नै गांधीगिरी काली मोड़िये।
जिणासूं देस सुख स्यांति सूं विकास री सड़क पर
आपरो गर्व सूं सीनो ताग
आगै बढ़ सकै।

❑ नागराज शर्मा

हास्य-व्यंग्य

बालकवि बैरागी

कई बार अति उत्साही आयोजक कवियों से पूर्वानुमति लिए बगैर ही निमंत्रण पत्रिका में उनके आने की सूचना छाप देते हैं। ऐसे ही एक आयोजक ने बालकवि बैरागी जी का नाम छाप कर, उन्हें आग्रह करने पहुँचा। निमंत्रण पत्रिका बैरागी जी को देते हुए कहा कि आपको अमुक तारिख को इस कार्यक्रम में जरूर आना है। कतिपय कारणों के चलते बैरागी जी ने अपनी असमर्थता जतानी चाही, परन्तु आयोजक कार्ड छप जाने एवं वितरण हो जाने का कारण बना मनाने का प्रयास करने लगे। निशाश हो बैरागी जी ने काका हाथरसी की ओर देखा। काका ने तपाक से कहा - बैरागी, बिल्कुल मत जाना। कल न कोई तुम्हारे मुंडन संस्कार की पत्रिका छपवाकर ले आयेगा और परसों तुम्हारे विवाह की।

७२वां स्थापना दिवस समारोह

आर्थिक विकास में मारवाड़ी समाज का खास योगदान

–लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी

शादी विवाह में आडम्बर–दिखावा समाज की तस्वीर बिगाड़ता है

–अध्यक्ष सीताराम शर्मा

''ओल्यूं आवे रे—कण-कण में गूंजे राजस्थान''

–समाज के प्रतिभावान कलाकारों की प्रस्तुति

७२वां स्थापना दिवस के अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी को सम्मेलन की तरफ से रजत स्मृति चिह्न भेंट करते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा। (दायें) उद्घाटन भाषण देते हुए लोकसभा अध्यक्ष।

सम्मेलन का ७२वाँ स्थापना दिवस समारोह स्थानीय कला मंदिर सभागार में सम्पन्न हुआ। जिसका उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने एवं अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने की।

श्री सज्जन भजनका

सर्वप्रथम श्री सोमनाथ चटर्जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सम्मेलन के कार्यक्रम उप-समिति के अध्यक्ष श्री सज्जन भजनका स्वागत भाषण दिया, अपने स्वागत भाषण में श्री भजनका ने सम्मेलन द्वारा किये जा रहे समाज सुधार कार्यक्रमों की चर्चा की, व राजस्थानी भाषा के मान्यता हेतु किए जा रहे प्रयास में सोमनाथ दा से सहयोग की अपेक्षा भी जतायी।

श्री राम अवतार पोद्दार

इस अवसर पर सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार ने कहा कि ''पिछले सात दशकों में देश एवं समाज में एक बड़ा परिवर्तन आया है, हमें परिवर्तन के साथ कदम मिलाकर चलना है। सम्मेलन भवन के निर्माण में हुई प्रगति पर भी प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भवन का कार्य तीव्र रफ्तार से चल रहा है, अगले एक-दो माह में भवन का नया प्लान बनकर तैयार हो जायेगा। पिछले माह

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

हुए अनूठे कार्यक्रम 'चिन्तन शिविर' द्वारा पारित 'वैवाहिक आचार संहिता' को घर-घर पहुंचाने हेतु सभी से सहयोग की भी अपील की।''

अध्यक्षीय भाषण

श्री सीताराम शर्मा

अपने अध्यक्षीय भाषण में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने राजस्थानी व भोजपुरी भाषाओं को सरकार द्वारा आठवीं सूची में शामिल किये जाने की प्रक्रिया पर हार्दिक बधाई दी एवं सभा को जानकारी दी कि संसद के सभा पटल पर प्रस्ताव को रखने में माननीय सोमनाथ दा ने विशेष रूचि दिखायी। सभापति सीताराम शर्मा ने आगे कहा कि **मारवाड़ी समाज के लोगों को मात्र राजनीतिक दलों में कोषाध्यक्ष बनकर ही संतोष नहीं कर लेना चाहिए, बल्कि उन्हें राजनैतिक दलों के सही रूप से कार्यकर्त्ता बनकर योग्य पद प्राप्त करने के लिए अपने आपको प्रस्तुत करें,** आपने कहा कि सम्मेलन समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति काफी संवेदनशील है, शादी-विवाह में हो रहे फिजूलखर्ची का कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए कहा कि शादी-विवाह में आडम्बर-दिखावा समाज की तस्वीर बिगाड़ता है। परिवार टूटने, तलाक और आडंबर जैसी कुरीतियों से समाज को मुक्ति दिलाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है, वैवाहिक आचार-संहिता का जिक्र करते हुए कहा कि इसका प्रचार हमें घर-घर में करना होगा। श्री शर्मा ने आगे कहा कि अन्य समाज की तरह मारवाड़ी समाज भी है। यह नहीं सोचना चाहिए कि मारवाड़ी समाज में सिर्फ धनी वर्ग ही पैदा लेते हैं, अन्य समाज की तरह ही इस समाज में जहां कई अच्छाइयाँ हैं तो कई कुरीतिाँ भी हैं, अमीर-गरीब सभी वर्ग के लोग हैं।

उद्घाटन भाषण

श्री सोमनाथ चटर्जी

मारवाड़ी सम्मेलन के ७२वें स्थापना दिवस के अवसर पर उद्घाटन भाषण देते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ने सम्मेलन द्वारा चलाये जा रहे समाज सुधार कार्यक्रम की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के विकास कार्यक्रमों को गति प्रदान करने के लिए सामाजिक विसंगतियों को दूर किया जाना बहुत जरूरी है। सम्मेलन के लोगो (Logo) की ओर सभी का ध्यान खिंचते हुए कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य ''म्हारो लक्ष्य राष्ट्र री प्रगति''। **इससे बड़ा चिन्तन कुछ हो ही नहीं सकता। प्रगति सिर्फ आर्थिक उन्नति से नहीं होती, सम्मेलन ने सर्वांगीन प्रगति की बात की है। हमें ऐसा समाज तैयार करना है, यह समाज राष्ट्र की प्रगति के बारे में सोचता है।** श्री चटर्जी ने कहा कि आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्र में इस समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। अब यह समाज शिक्षा, साहित्य और संस्कृतिके क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। लोकसभा अध्यक्ष ने मुक्त कंठों से मारवाड़ी समाज का आह्वान करते हुए कहा कि संसद को अच्छे लोगों की जरूरत है, इसके लिए मारवाड़ी समाज को भी राजनीति में सक्रिय रूप से हिस्सा लेकर उसकी गरिमा में वृद्धि करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ५४५ सांसद सदस्यों में ४० सांसदों पर आपराधिक मामले चल रहे हैं, लेकिन सभी सांसदों को इसकी भरपाई करनी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि संसद व सांसद जनता के प्रति जवाबदेह हैं, इसके लिए अच्छे लोगों को ही चुना जाना चाहिए, ताकि देश के हित में कामकाज हो सके। अपने राजनीति जीवन से ऊपर उठकर उन्होंने मारवाड़ी समाज का देश की आर्थिक तरक्की में महत्वपूर्ण योगदान की विशेष चर्चा की, शहीद भगत सिंह के योगदान पर बोलते हुए कहा कि कई बार हमें संसद में सांसदों के कृत्य पर

समाज विकास विशेषांक का विमोचन करते हुए श्री सोमनाथ चटर्जी। सहयोगी सम्पादक श्री शंभू चौधरी एवं साथ देते हुए राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रविन्द्र कुमार लड़िया।

ग्लानि होती है। देश को ऊपर ले जाने के लिए समाज में हो रहे सुधार की विशेष जरूरत पर बल दिया। श्री सोमनाथ जी ने अपने भाषण के दौरान बालश्रम पर भी चर्चा करते हुए कहा कि बाल-श्रम को रोकने के लिए कानून तो बन गया है, लेकिन अब तक बाल श्रम पूरी तरह रुका नहीं है, कई शिशु आज भी अपने परिवार का पेट पालने के लिए काम करने पर मजबूर हैं। सामाजिक कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि आज भी देश में बहुएं जलायी जायें या भ्रूण में कन्या होने पर उसे समाप्त कर दिया जाय अथवा हम अपने पारिवारिक समारोहों में धन का अपव्यय करें तो राष्ट्र को ही इसकी

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

क्षति उठानी पड़ती है, आपने आगे कहा कि विषमताओं एवं कुरीतियों का उन्मूलन राष्ट्रीय विकास के बुनियादी कार्यक्रम हैं। इस अवसर पर सम्मेलन के 'समाज विकास' के ७२वां स्थापना दिवस विशेषांक का विमोचन किया। इस विशेषांक के सहयोगी सम्पादक श्री शम्भु चौधरी व राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रवीन्द्र कुमार लड्ढ़ा ने उन्हें विशेषांक की एक प्रति भी भेंट की, विशेषांक का विमोचन करते हुए आपने मुख्य पृष्ठ पर ''वैवाहिक आचार संहिता'' का उल्लेख करते हुए कहा कि सम्मेलन सारे देश में अपनी कार्य सूची को लेकर कार्य करे, पूरा देश आपके नेतृत्व को स्वतः स्वीकार करेगा। सम्मेलन द्वारा आयोजित आत्मचिंतन शिविर के आयोजन पर आपने जोर देकर कहा कि यह गर्व की बात है कि आपका समाज कुरीतियों के प्रति सजग है। कवि श्री गजानन वर्मा का भी अभिनंदन करते हुए इनके द्वारा रचित गीतों में राष्ट्र प्रेम की भूरि-भूमि प्रशंसा की। अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने श्री सोमनाथ जी को सम्मेलन की तरफ से रजत स्मृति चिह्न भेंट किया।

श्री गजानन वर्मा जी को स्व. सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार

सम्मेलन के ७२वां स्थापना दिवस के अवसर पर स्व. सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार २००६ के लिए राजस्थान

स्व. सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार-२००६ के अवसर पर लोकप्रिय राजस्थानी गीतों के सम्राट श्री गजानन वर्मा को प्रशस्ति पत्र भेंट करते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी।

के लोकप्रिय व राजस्थानी गीतों के सम्राट श्री गजानन वर्मा को दिया गया। श्री नन्दलाल रुंगटा द्वारा अपने पिता स्व. सीताराम रुंगटा की स्मृति में श्री वर्मा को 11000/- रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल देकर उन्हें सम्मानित किया। लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी जी ने श्री गजानन वर्मा को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री वर्मा ने समारोह में अपने दो गीत प्रस्तुत कर सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया।

''जां रण खेता लोही बरसे, बांपर जल मत बरसाई,
प्राण बींजता वीर उगै तो उमड घुमड सौ बलखाई''

श्री गजानन वर्मा संक्षिप्त परिचय

श्री गजानन वर्मा जी का जन्म रतनगढ़ (राजस्थान) में हुआ। आप आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों के लोकप्रिय कवि गीतकार भी रह चुके हैं। राजस्थानी लोक-संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए केन्द्रीय (राष्ट्री) संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत। आपकी कई पुस्तकें जिसमें ''स्पंदन'', ''धरती री धुन'', ''सोनी निपजै रेत में'', बारहमासा, चोमासा, हल्दी को रंग-सुरंग, आदि काफी लोकप्रिय रही हैं। अखिल भारतीय स्तर पर राजस्थानी गीतों को धूम मचा देने वाले राष्ट्रीय कवि श्री गजानन वर्मा स्वभाव से काफी भावुक एवं विचारों में राष्ट्रप्रेम झलकती है।

श्री अरुण गुप्ता

श्री गजानन वर्मा का जीवन परिचय राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री अरुण गुप्ता ने दिया एवं कार्यक्रम का संचालन किया।

सजन म्हारौ मन अचपलौ है

-गजानन वर्मा-

सजन म्हारौ मन अचपलौ है बता कांयी करूँ?
मिलन-मेलांरी तो आखी बात अलगी रह गई,
विरह लागी रौ संताप विरहण सह गई
अगन झुलस्यौ तन दूरबलौ है बता कांयी करूँ?
आज काली रात तो बिन बात नागण सी डसे
जलमरूं जद रात भर दिवलौ पड़ौसण-घर चसै,
तपन-तप जोवन जलजलौ है बता कांयी करूँ?
तीज त्यूहारां बलम है बा' बड़ी घर-आ बड़ौ
थां बिना खुल्हा पड्या पट पाट आगल आ जड़ौ
लगन बिन घण-धन गलगलौ है, बता कांयी करूं?

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

७२वां स्थापना दिवस

सांस्कृतिक कार्यक्रम ''ओल्यूं आवे रे''

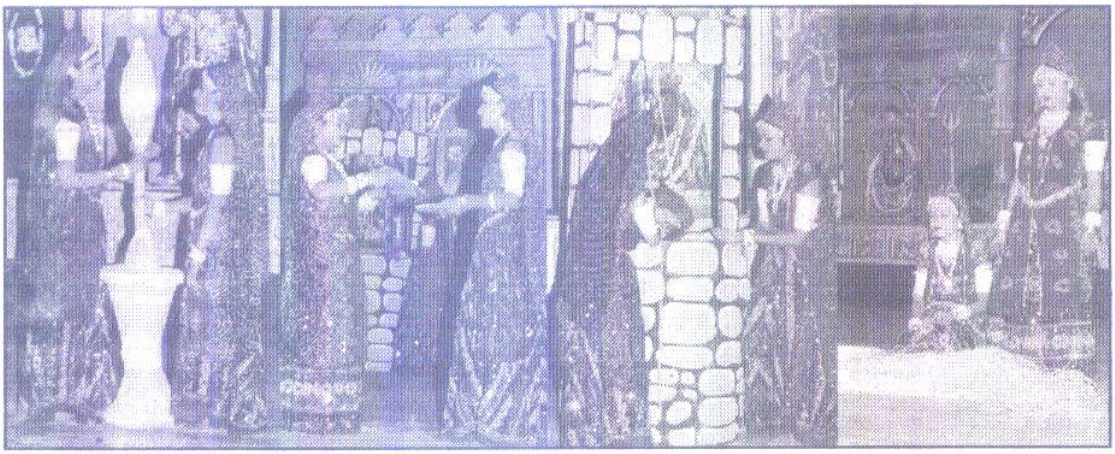

७२वें स्थापना दिवस के अवसर पर ''ओल्यूं आवे रे '' सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए समाज की बालिकायें।

श्री मुकुन्द राठी की परिकल्पना एवं निर्देश एवं ''सेंचुरी प्लाई'' के सौजन्य से इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम ''**ओल्यूं आवे रे**'' प्रस्तुत किया गया। राजस्थान के देवी-देवताओं से सजा-भरा, राजस्थानी वेषभूषा में समाज के बाल कलाकारों द्वारा एक महत्वपूर्ण परिदृश्य प्रस्तुत किया गया जिसको देख दर्शक समूह ने तालियों की गरगराहट से कार्यक्रम का स्वागत किया।

धोरा री धरती, राजस्थान की संस्कृति, सभ्यता में रचे बसे गीत-संगीत, माड और नृत्य की प्रस्तुति पर आधारित ''**ओल्यूं आवे रे**'' से पूरा सभागार गुंजायमान हो उठा। धरती धोरा री, केसरिया बालक, घूमरिए घूमर हालो नी और उड़-उड़ री कागा जैसे राजस्थानी लोकगीतों ने मारवाड़ की वीरता, त्यौहार और उत्सवों की झांकी कोलकाता में जीवंत कर दी। लोक गायक-गायिका **मारुति मोहता, संगीता, राजीव माहेश्वरी, राजेश सादानी की आवाज के साथ बाल कलाकार जया शर्मा के नृत्य व गायन ने स्थापना दिवस के अवसर पर आये दर्शकों को मोह लिया।** नृत्य पर **सुप्रिया बैद, पुनम रावत, स्वाति जायसवाल, स्नेहा अग्रवाल, मोनू अग्रवाल, रजनी डागा, प्रेरणा डागा, आयुषी भावसिंहका, राशिका कोठारी, निकिता थिरानी, प्रियंका झुनझुनवाला,**

सुश्री जया शर्मा

बंदना बिन्नानी ने जहाँ नृत्य प्रस्तुत किया। इन बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत ''कण कण में गूंजे राजस्थान, म्हारी दौराणी-जेठाणी रूठगी रे, आदि नृत्यमय गीत प्रस्तुत किया गया। अन्त तक सभागार तालियों से गूँजता रहा। इस कार्यक्रम का नृत्य-निर्देशन **श्री देव गोविंद बिन्नानी** एवं संगीत संयोजन **नीलमणि राठी** ने किया।''

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

७२वां स्थापना दिवस

श्री हरि प्रसाद कानोड़िया

धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि सम्मेलन के कार्यकलापों में नयी तेजी आयी है एवं नये-नये कार्यक्रम हाथ में लिए जा रहे हैं, समाज सुधार एवं समरसता के कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जा रही है। श्री कानोड़िया ने कहा कि आज के कार्यक्रम में पहली बार समाज के प्रतिभावान कलाकारों को अपने साथ जोड़कर सम्मेलन ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। सभी के प्रति इन्होंने आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया।

७२वें स्थापना दिवस के अवसर पर खचाखच भरा कला मंदिर का सभागार।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री राजेन्द्र खण्डेलवाल, रविन्द्र कुमार लड़िया, प्रेम सुरेलिया, नवल जोशी, ओमप्रकाश अग्रवाल, विनोद सराफ, अमलेश शर्मा, अनील डालमिया आदि लोगों ने मुख्य भूमिका निभायी। कार्यक्रम के शुरूआत में चायपानी की भी व्यवस्था की गयी थी। ●

आत्मविश्वास

● डॉ. संजय मालपाणी

कुछ वर्षों पूर्व एक विद्यालय में मेरा व्याख्यान था। व्याख्यान के पश्चात् 13-14 वर्ष का एक बालक मंच पर मेरा पास आया। अपना नाम उसने समीर बताया। व्याख्यान काफी अच्छा था यह कह कर उसने मेरा अभिनंदन किया और संगमनेर में मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। घर में यदि चाय अच्छी बनी हो तो भी हमारे मुंह से प्रशंसा के दो शब्द बड़ी कठिनाई से निकलते हैं। किन्तु इस बालक ने स्टेज पर आकर एक अपरिचित व्यक्ति से जिस प्रकार अपने मन के भाव को व्यक्त किया वह मेरे दिल को छू गया। बाद में संगमनेर लौटने पर काफी दिनों तक मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा किंतु वह नहीं आया।

बात आई-गई हो गई किंतु दो वर्ष पश्चात् एक दिन अचानक वह मेरे पास आया। उसका चेहरा निस्तेज दिख रहा था कि मैं उसे पहचान नहीं पा रहा था। दो वर्ष पूर्व हुए व्याख्यान का संदर्भ देते हुए उनसे बातचीत आरंभ की। 15-20 मिनट तक मैं शांतिपूर्वक उसकी बात सुनता रहा। वह काफी चिंतित था। क्योंकि दसवीं कक्षा के बोर्ड की परीक्षा में उसके पेपर्स अच्छे नहीं हुए थे। उसकी ऐसी धारणा बनी हुई थी कि दसवं की परीक्षा में असफल होने का अर्थ जीवन में हर ओर अपयश ही मिलता है।

मैंने जमकर पढ़ाई की थी। दिन-रात एक करके बोर्ड के पूर्व विद्यालय स्तर पर होने वाले परीक्षा की तैयारी मैंने पूरी की। इस परीक्षा में गणित में मुझे 100 में 95 अंक मिले। मैं खुशी से फूला नहीं समाया। घर आकर बड़े उत्साह के साथ मैंने पिता जी को यह खबर दी। किंतु शाबाशी के दो शब्द तो दूर रहे, पांच अंक कहाँ रह गये इस बात पर पिताजी ने मुझे फटकार लगा दी और कहा कि बोर्ड की परीक्षा में ऐसा न हो इसके लिए पढ़ाई पर ध्यान दो। मैंने अपनी ओर से कहीं कुछ कमी नहीं छोड़ी थी किन्तु उस दिन के बाद मेरा उत्साह ही जैसे ठंडा पड़ गया। इसके बाद बोर्ड की परीक्षा तक मैं जब भी पढ़ने बैठता मेरे दिल की धड़कनें बढ़ जाती यह सोचकर कि कहीं मार्कस् कम आये तो.... ? मेरी एकाग्रता जाती रही और परिणाम यह हुआ कि मेरे पेपर्स अच्छे नहीं गये।

ये सारी बातें करते हुए उसकी आँखें भर आयी थी। उसे आधार देने के लिए मैं बाद में काफी समय तक बात करता रहा। किंतु उसे इस मनोवस्था से बाहर निकालने के लिए उसके माता-पिता की सहायता आवश्यता थी। उसके पिताजी से मैंने फोन पर बात की, उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ।

बच्चों के पेट की भूख पूरी हो इसके लिए प्रत्येक माता-पिता अथक परिश्रम करते हैं। किंतु भूख सिर्फ पेट की ही नहीं होती। बुद्धि और मन की भूख मिटाना भी इतना ही महत्त्वपूर्ण है यह बात हम भूल जाते हैं। पेट के साथ-साथ पीठ की भी एक भूख होती है। शाबासी देने के लिए कुछ पैसे खर्च नहीं होते फिर भी हम इसमें कंजूसी करते हैं। बच्चों की किसी गलती पर उनके गालपर दो चपत जमाने से भी उनके किसी छोटी से छोटी उपलब्धि पर उनकी पीठ पर शाबासी की एक थाप देना ज्यादा असरदायक होता है। बच्चों का उत्साह इससे कई गुना बढ़ जाता है। अपने बच्चे द्वारा बनाया गया कोई चित्र यदि हमने अपने घर की दीवार पर या केबिन में लगा लिया तो इससे बच्चों को असीम आनंद प्राप्त हो सकता है। उसके किसी एक गुण के विषय में हमने प्रशंसा के दो शब्द कह दिये तो उसका आत्मविश्वास बढ़ सकता है। और इसके लिए हमें सिर्फ थोड़ा-सा सजग रहने की आवश्यकता है। जागरुक रहकर यदि हमने ध्यान दिया तो हम देखेंगे कि एकाध मौका रोज ही आता है। हाँ यह सब अत्यंत सहजता व दिखावे से दूर हो तथा अति भी न हो इसका ध्यान रखना आवश्यक है।

(डॉ. संजय मालपाणी बच्चों के संस्कार पर काफी कार्य कर चुके हैं। -संपादक)

बिहार : रजत जयन्ती अधिवेशन

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

रजत जयन्ती प्रांतीय अधिवेशन, मुंगेर, १२–१३ जनवरी २००७

देश को आत्म-निर्भर बनाने में मारवाड़ी समाज की अहम् भूमिका

-केन्द्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव

एक सक्रिय वैचारिक आन्दोलन का पर्याय है मारवाड़ी सम्मेलन

-सम्मेलन सभापति सीताराम शर्मा

''हम पहले बिहारी हैं, फिर मारवाड़ी''

-बिहार प्रादेशिक अध्यक्ष नथमल टिबड़ेवाल

बिहार सरकार के पूर्व वित्तमंत्री श्री शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल, केन्द्रीय सिंचाई मंत्री श्री जयप्रकाश नारायण यादव, बिहार प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा।

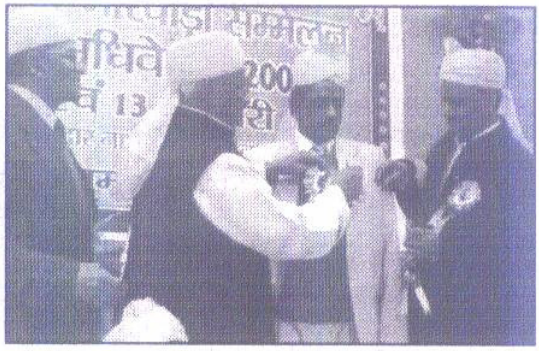

नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल का स्वागत करते हुए निवर्तमान अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, मंत्री कमल नोपानी एवं पूर्व अध्यक्ष डॉ. रमेश केजड़ीवाल।

१३ जनवरी। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के रजत जयन्ती अधिवेशन के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि व केन्द्रीय जल संसाधन राज्यमंत्री जयप्रकाश नारायण यादव ने कहा कि पराधीन भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने में मारवाड़ी समाज ने उल्लेखनीय एवं अविस्मरणीय योगदान दिया है। आजादी के बाद इस समाज ने देश को आर्थिक आजादी प्रदान करने व आत्मनिर्भर बनाने में जितना योगदान दिया वह प्रशंसीय है। मारवाड़ी समाज ने अपनी संस्कृति व सभ्यता को बचाते हुए जितना विकास किया वह अन्य भारतीय जातियों व समुदाय के लिए अनुकरणीय है। इस समाज ने अपने शान्त, मेहनती आत्म-विश्वास और जाझारू प्रवृत्ति के कारण देश ही नहीं विदेशों में भीअपना सिक्का जमाया।

धैर्य और अनुशासन के बूते ही यह समाज आज पूरे देश में सशक्त आर्थिक शक्ति के रूप में विराजमान है। मुंगेर के दीवान बहादुर केदारनाथ गोयनका नगर में आयोजित बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के २५वें प्रान्तीय अधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर श्री यादव ने राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल कराने में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और कहा कि राज्य में मारवाड़ियों को सुरक्षा प्रदान कराने के लिए वे हमेशा प्रयत्नशील रहे। उन्होंने नारी व युवा शक्ति को सशक्त करने का आह्वान करते हुए लड़के व लड़कियों में भेद करने को गलत बताया।

इसके पूर्व बिहार योग भारती के स्वामी कैवल्यानन्द एवं स्वामी

विवाह में सादगी बरतें।

बिहार : रजत जयन्ती अधिवेशन

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया

शंकरानंद ने दीप प्रज्वलित कर अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए स्वामी कैवल्यानंद ने मारवाड़ी समाज को सत्य, निष्ठा और सेवा के संकल्प की अपील की, स्वामी शंकरानंद ने कहा कि देश के विकास में इस समाज की महती भूमिका रही है एवं समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर भांगड़ ने स्वागत भाषण दिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अधिवेशन के विशिष्ट अतिथि श्री सीताराम शर्मा ने इस अवसर पर समाज सुधार एवं समरसता का आह्वान करते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज ने ओरक्षण की नहीं बल्कि काम करने के लिए सुरक्षा एवं बेहतर माहौल की मांग की है। मारवाड़ी समाज अपनी खूबियों को खत्म करते जा रहे हैं। परिवार का अनुशासन टूट रहा है। फिजूलखर्ची बढ़ी है तथा वैवाहिक आचार-संहिता खत्म हो रही है। शादी में शराब व बैंडबाजों का चलन बढ़ा है जो घातक है। इस पर समाज को रोक लगाने की जरूरत है। पूर्व में पर्दा-प्रथा हमारे यहां थी अब यह समाप्त हो गयी है, लेकिन कुछ हद तक पर्दे की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हर युवती को अपना वर चुनने का अधिकार होना चाहिए लेकिन जब उन्होंने भुवनेश्वर में यह प्रस्ताव लाया तो मानो भूचाल आ गया। उन्होंने समाज के लोगों से राजनीतिक चेतना जागृत करने का आह्वान करते हुए कहा कि इसके लिए मारवाड़ी सम्मेलन विभिन्न प्रांतों में राजनीतिक कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित करेगा। उन्होंने बिहार से इसे प्रारम्भ करने का आह्वान किया।

श्री शर्मा ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन को विचार मंच से आगे बढ़कर एक सक्रिय वैचारिक आन्दोलन का रूप लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन की केन्द्रीय, प्रान्तीय, जिला स्तर पर सांगठनिक क्षमता का विकास कर इसे सही मायने में मारवाड़ी समाज की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करना है। सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास के लिए मारवाड़ी सम्मेलन में नई चेतना जागृत करनी है। मारवाड़ी समाज की नई आधुनिक प्रतिभा को देश के सम्मुख प्रस्तुत करना तथा साहित्य, कला, राजनीति, ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में उभरती प्रतिभाओं को परिचित के साथ उन्हें मान्यता व सम्मान प्रदान कर समाज को नया स्वरूप व नया दायित्व देना है। उन्होंने कहा कि समाज शिक्षित हुआ है पर सुधार अभी बाकी है।

अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कोलकाता में मारवाड़ी सम्मेलन का पांचतल्ला वातानुकूलित भवन पांच करोड़ की लागत से बनाये जाने की घोषणा की और कहाकि अप्रैल से निर्माण कार्य प्रारम्भ हो जायेगा जिसमें आर्ट गैलरी, लाइब्रेरी, तकनीकी प्रशिक्षण, अतिथिशाला की व्यवस्था की जायेगी। उन्होंने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मारवाड़ी सम्मेलन के द्वारा अपने व अन्य समाज के पांच बच्चों को प्रत्येक वर्ष छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने की बात कही और बताया कि मारवाड़ी समाज के युवाओं को अप्रैल माह से मुफ्त औद्योगिक प्रशिक्षण दिया जायेगा जिसमें समाज के सफल उद्यमी सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन पाँच राज्यों छत्तीसगढ़, कर्नाटक, दिल्ली, उत्तरांचल व गुजरात में जल्द ही नया इकाई प्रारम्भ कर अपने सदस्यों की संख्या एक लाख तक करेगी।

अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए मारवाड़ी महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती अरुणा जैन ने अपने सम्बोधन में भ्रूण

मुंगेर में दूसरी बार हुआ अधिवेशन

मुंगेर। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना के बाद सन् १९४३ में मुंगेर में इसका प्रथम वार्षिक अधिवेशन हुआ था। ६५ वर्षों के लंबे अंतराल के बाद मुंगेर में २५वां रजत जयंती अधिवेशन का आयोजन किया गया। वर्तमान में मुंगेर के जगदीश प्रसाद अग्रवाल सम्मेलन के प्रादेशिक उपाध्यक्ष हैं।

दहेज, दिखावा, करें पराया।

बिहार प्रादेशिक अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल एवं निवर्तमान अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला। बीच में परिलक्षित हैं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ओंकारमल अग्रवाल (असम)

हत्या व परिवार-कल्याण के कारणों पर प्रकाश डाला और कहा कि महिलाओं को साक्षर करके ही हम छोटा और खुशहाल परिवार की परिकल्पना कर सकते हैं। उन्होंने उपस्थित महिलाओं से मारवाड़ी संस्कृति को बढ़ावा देने की अपील की।

महिला सत्र की अध्यक्षता प्रदेश महिला अध्यक्षा निशा सराफ कर रही थी। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मीना गुप्ता, प्रदेश सचिव सरोज जैन, पूर्व प्रांतीय अध्यक्षा सरोज गुटगुटिया, चनपटिया शाखा अध्यक्ष वीणा तुलस्यान, नम्रता जैन, तारादेवी जैन, आदि ने महिला सत्र में भाग लेते हुए महिलाओं को भ्रूण हत्याओं पर रोक लगाने, मारवाड़ी सभ्यता व संस्कृति से अपने बच्चों को रूबरू कराने का आग्रह किया।

''हम पहले बिहारी फिर मारवाड़ी''

समारोह में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल ने अधिवेशन स्थल पर निवर्तमान अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला से पदभार ग्रहण करने के उपरान्त अपने सम्बोधन में कहा कि बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के इस रजत जयन्ती अधिवेशन में आपने मेरे हाथों में नाव की पतवार दी है। यह आपका मुझ पर अटूट भरोसा है।

समाज के बड़े-बड़े नेताओं ने बड़ी-बड़ी बाधाओं को दूर करते हुए सम्मेलन को यहां तक लाकर खड़ा किया है। नये सत्र में कहाँ तक आगे जा पायेगा, मैं नहीं कह सकता। लेकिन मेरी कोशिश होगी ईमानदारी और मेहनत की। यह भार लेने का मन मैंने बनाया, आपने मोहर लगायी। मैं इसके लिए आपका आभारी हूँ। आप साहस देंगे तो मैं कदम पीछे नहीं हटाऊंगा। बाधाओं से हार नहीं मानूंगा। समाज के सम्मान पर आंच नहीं आने दूंगा। समाज की पहचान केवल व्यवसाय नहीं शिक्षा से भी हो। नई पौध, नई प्रतिभा जो समर्थ नहीं है वह कमजोर हो सकती है, पर समाज कमजोर नहीं है।

श्री टिबड़ेवाल ने पूव प्रांतीय अध्यक्षों के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि ''हम बिहार में पैदा हुए और बिहार में पहली श्वास ली इसलिए इस प्रदेश के उत्थान में हमारा उत्थान है। इसकी अवनित में हमारी अवनित। इसके विकास में हम कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे। इसलिए कि हम पहले बिहारी हैं फिर मारवाड़ी।''

मारवाड़ी कौन? जो ईर्ष्या से आक्रान्त नहीं है। जो प्रान्तीयता की संकीर्ण भावना से ग्रस्त नहीं है, जो राष्ट्र को टुकड़ों में विघटित करने के षडयंत्र कारी हथकण्डों में साझीदार नहीं है, वही सच्चा मारवाड़ी है। समय पड़ने पर जिस दानवीर ने सम्पूर्ण सम्पत्ति राष्ट्र के लिए न्यौछावर कर दी ऐसे भामाशाह की सन्तान कहाने व उसके आदशों का पालन करने में गौरव का अनुभव करे वह मारवाड़ी।

सामाजिक कुरीतियों का निवारण

इस दिशा में मारवाड़ी सम्मेलन के अन्तर्गत समाज के समर्पित भाइयों एवं बहनों द्वारा सामूहिक विवाहों के आयोजन को प्रदेश स्तर पर फैलाने का प्रयत्न रहेगा। एक और बीमारी समाज में बढ़ती जा रही है। वह है ''परित्यक्तता'' की। परिवार के परिवार इससे टूटते जा रहे हैं। हमें डर है कि सामाजिक संरचना ही टूट न जाये।

संगठन और सुरक्षा

मारवाड़ी समाज आये दिन आतंकवाद, अपहरण का शिकार रहता है। मेरा स्पष्ट निवेदन है कि कम से कम इतना ही करें कि समाज के किसी भी भाई पर कभी भी कोई कष्ट आये तो आपसास के समाज के भाई लोग पीड़ित भाई के लिए इकट्ठे हो जायें।

सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का सम्मान हो

सामाजिक कार्यकर्त्ता जीवन भर संघर्ष करते हुए समाज विकास की कोशिश में प्रयत्नशील रहते हैं। मेरा मानना है कि ऐसे वरिष्ठ

राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री अरुण गुप्ता का अधिवेशन में स्वागत करते हुए।

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

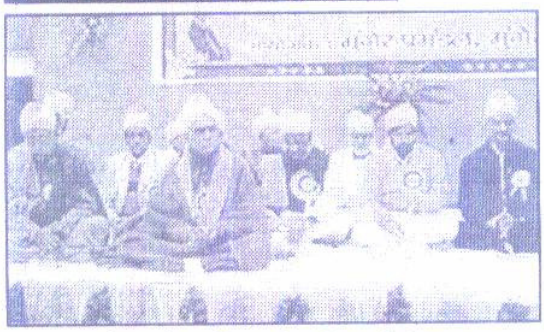

सम्मेलन में उपस्थित मंचासीन अतिथिगण।

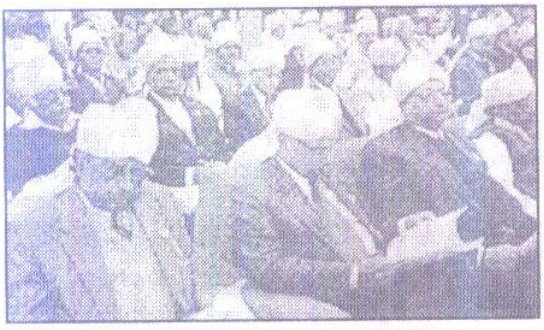

सम्मेलन में उपस्थित मारवाड़ी समाज के लोग।

समाजसेवियों का सम्मान होना चाहिए। मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि बिहार को कुछ प्रमुख संस्थाओं ने २८ जनवरी २००७ रविवार को पटना में हमारे वरिष्ठ मार्ग दर्शक आदरणीय नूतन जी के ७५ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में रचनात्मक जीवन समारोह मनाने जा रही है। मैं समाज के भाई बहनों से बात करूंगा और उनकी राय होगी तो उन संस्थाओं द्वारा आयोजित समारोह में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन भी सम्मिलित हो सकता है। मैं चाहूंगा कि यह नया सत्र संस्कृति संरक्षण सत्र के रूप में अपनी योजनाओं को मूर्त्त रूप प्रदान करे।

अन्तिम निवेदन

समाज ने अपनी उदारता का परिचय देते हुए अनेक धार्मिक सामाजिक व सार्वजनिक संस्थाओं का निर्माण किया है, लेकिन हम लोग कुछ में महन्त बन गये हैं, न करते हैं न करने देते हैं। संस्थाओं के हित में अपने मतभेद दूर करने होंगे। संकीर्णता से ऊपर उठना होगा।

इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष **श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला** ने कहा कि मारवाड़ी समाज का प्रदेश के उत्थान, शिक्षा, सेवा में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यदि सरकार समस्त बिहार को आधारभूत संरचना एवं अच्छा माहौल देने में सक्षम रहती है, तो बिहार जल्द ही विकसित राज्यों की श्रेणी में आ सकता है।

पूर्व मंत्री शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल ने कहा कि मारवाड़ी समाज धन अर्जन को ही एकमात्र उद्देश्य समझना छोड़ मान-सम्मान के साथ युवाओं में राजनीतिक चेतना जगाये।

राज्यसभा सदस्य राजनीति प्रसाद ने अधिवेशन में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज वे जिस स्थान पर हैं उसमें मारवाड़ी समाज का बड़ा योगदान है। उन्होंने इस समाज की एकता, सहिष्णुता एवं दान की प्रवृत्ति की प्रशंसा की।

अधिवेशन को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सर्वश्री ओंकारमल अग्रवाल, नन्दलाल रूंगटा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जाजोदिया, पश्चिम बंग के प्रान्तीय अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया, पूर्वोत्तर के प्रांतीय अध्यक्ष विजय मंगलूनिया, प्रदेश महामंत्री कमल

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के
नवनिर्वाचित अध्यक्ष का संक्षिप्त परिचय

श्री नथमल टिबड़ेवाल

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के 12, 13 जनवरी 2006 को योग नगरी मुंगेर में सम्पन्न हुए रजत जयन्ती अधिवेशन के शुभ अवसर पर सत्र 2006-07 के लिए प्रादेशिक अध्यक्ष का दायित्व ग्रहण करने वाले श्री नथमल टीबड़ेवाल का जन्म 15 नवम्बर 1952 को राजस्थान के झुंझनूं धाम में हुआ। इनके पिता का नाम नवरंगलाल टीबड़ेवाल एवं माता मणि देवी था। ये छः भाइयों एवं चार बहनों में अपने माता-पिता के द्वितीय सन्तान हैं। इन्होंने उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से वाणिज्य में स्नातक की डिग्री हासिल की है। इनकी पत्नी का नाम प्रेमलता टीबड़ेवाल है। इनके दो पुत्र संजय एवं सुमित हैं जो व्यवसाय में रत हैं। श्री टीबड़ेवाल जनसेवा एवं सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में एक सुपरिचित नाम हैं। आप 1968 में स्थापित मारवाड़ी विकास मंच के लगातार 10 वर्ष तक संस्थापक सचिव रहे। 1969 में निर्मित मारवाड़ी इन्टर कॉलेज गोरखपुर के कोषाध्यक्ष एवं स्थापक न्यासी रहे। 1980 में आप स्थानीय रूप से मुजफ्फरपुर में बस गये। 1980-90 से श्री टीबड़ेवाल मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़े। मुजफ्फरपुर में मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के आयोजन में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रान्तीय सम्मेलन के सत्रकाल 2003-05 में आप प्रादेशिक संगठन मंत्री के रूप में प्रदेश में 100 से अधिक शाखाओं का दौरा किया। श्री टीबड़ेवाल चाहते हैं कि वे सामाजिक एकरूपता की प्रत्येक कड़ी को पीरो कर एक सशक्त संगठन बनाने में अहम् भूमिका निभा सकें।

विलास विनाश है।

बिहार : रजत जयन्ती अधिवेशन

नोपानी, प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष जगदीश प्रसाद अग्रवाल, बिहार प्रा. मार. महिला सम्मेलन की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सरोज गुटगुटिया आदि ने भी सम्बोधित किया।

इस अवसर पर प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के कर-कमलों से किया गया।

अधिवेशन में आगत अतिथियों के स्वागत में सरस्वती शिशु मन्दिर की छात्राओं ने स्वागत-गान प्रस्तुत किया एवं मुंगेर मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों द्वारा आगत अतिथियों का फूल-मालाओं, शॉल व चाँदी के माँ चण्डिका के नेत्र के प्रतीक चिह्न व राजस्थानी पगड़ी भेंट कर अभिनन्दित किया गया।

मुंगेर में आयोजित बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के इस रजत अधिवेशन को सफलता हेतु सक्रिय भूमिका का निर्वाह करने वालों में थे सर्वश्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला - प्रादेशिक अध्यक्ष, जगदीश प्रसाद अग्रवाल - प्रादेशिक उपाध्यक्ष, कमल नोपानी- प्रादेशिक महामंत्री, श्याम सुन्दर भांगड़ - स्वागताध्यक्ष, गोपाल प्रसाद वर्मा - स्वागत मंत्री, निर्मल कुमार मोदी - प्रमण्डलीय मंत्री।

कार्यक्रम का संचालन मुंगेर प्रमण्डल मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक निर्मल कुमार जालान ने किया।

अधिवेशन को अपनी उपस्थिति से सफल एवं गरिमा प्रदान किया - सर्वश्री गोपाल अग्रवाल, प्रदीप जोशी, संजय सरावगी (सभी विधानसभा सदस्य), मोहनलाल अग्रवाल (विधान परिषद सदस्य), राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री अरुण गुप्ता, बालकृष्ण माहेश्वरी-राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कोलकाता, जगदीश चन्द्र मिश्रा 'पप्पु' - राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-मारवाड़ी युवा मंच, श्रीमती रीतू जैन- राष्ट्रीय सह सचिव, अ.भा.मा. महिला सम्मेलन, श्रीमती सरिता बजाज प्रान्तीय अध्यक्ष-बिहार प्रा. मा. युवा मंच, श्रीमती निशा सर्राफ-प्रान्तीय अध्यक्ष-बिहार प्रा. मा. महिला सम्मेलन, बजरंगलाल नाहटा-प्रान्तीय महामंत्री-पूर्वोत्तर, शिवकुमार केजरीवाल-प्रान्तीय महामंत्री-बिहार प्रा. मा. युवा मंच, श्रीमती सरोज जैन-प्रान्तीय महासचिव-बिहार प्रा. मा. महिला सम्मेलन, नागरमल बाजोरिया, शिवकुमार रुंगटा, राजेश जैन, उमेश राजगढ़िया, सन्तोष बंसल, मनोज जैन, गोपाल शर्मा, सुनील डोकानिया, दिलीप सर्राफ, प्रदीप वर्मा आदि ने।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में झूमे श्रोतागण

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के रजत जयंती अधिवेशन में हुए सांस्कृतिक संध्या की एक झलक।

सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरम्भ विशाल जैन की गणपति वंदना से हुआ। स्वागत गीत कंचन केडिया, सरिता, सुनीता, हेमलता, सरिता जैन आदि ने गाया। निर्मल जैन के संगीत में मारवाड़ी समाज की छोटी बच्चियों ने राजस्थानी एवं अन्य लोकगीतों के साथ नृत्य के मनोरम कार्यक्रम प्रस्तुत कर सम्मेलन में आये अतिथियों तथा समाज के स्थानीय महिला-पुरुषों को भरपूर मनोरंजन किया। आकांक्षा खेतान को कृष्ण-भक्ति पर आधारित भाव गीत के लिए काफी सराहा गया। राजेश जैन ने कहा कि इस कार्यक्रम के लिए बच्चियों को पहले से प्रशिक्षित किया गया था। व्यवस्था में एक सप्ताह से लगे मारवाड़ी युवा मंच के युवकों ने लगातार परिश्रम कर कार्यक्रम को सफल बनाया। प्रदीप वर्मा के नेतृत्व में भजन गायक तथा संगीतकार निर्मल जैन तथा वृंदा पुरुषोत्तम ने इसका संचालन किया।

विवाह में सादगी बरतें।

बिहार : रजत जयन्ती अधिवेशन

विकास के लिए मारवाड़ी समाज संकल्पित

मुंगेर। मारवाड़ी समाज व्यापारिक, शैक्षणिक, सामाजिक विकास के लिए कृतसंकल्प है। यह बात शनिवार को बिहार प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के रजत जयंती अधिवेशन में शामिल होने आए समुदाय के लोगों से बातचीत में उभर कर सामने आई।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने एक विशेष भेंट में कहा कि समाज ने देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि पहले की तुलना में राज्य के विकास की सम्भावना बढ़ी है। आपराधिक घटनाओं में कमी आई है। राज्य में निवेश के प्रति सदैव समाज प्रत्यनशील रहेगा। क्षेत्र की आर्थिक विषमता दूर करने के लिए समाज कृतसंकल्प है। पत्रकारों से बातचीत में **मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जाजोदिया** ने कहा जहां विकास की सम्भावना कम होती है वहां से आम लोगों का पलायन शुरू हो जाता है। पलायन के लिए स्थानीय प्रशासन और विधि-व्यवस्था जिम्मेवार हैं।

मुंगेर जैसे छोटे शहरों में मारवाड़ी सम्मेलन का आयोजन होना एक अच्छी शुरूआत है। उन्होंने कहा कि बिहार में विकास की सम्भावना बढ़ी है। उन्होंने कहा कि जहां हाथ को काम हो, पेट में रोटी हो और श्रम का सम्मान हो, मारवाड़ी समुदाय विकास के लिए अग्रसर रहेगा।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा अरुणा जैन ने कहा कि मारवाड़ी समुदाय के लिए बिहार में सबसे बड़ी समस्या सुरक्षा की है। राजधानी पटना भी असुरक्षित है। इसके बावजूद पुष्पा चोपड़ा जैसी महिलाओं ने व्यवसायिक क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम उठाया है। राज्य में मारवाड़ी समाज की महिलाएं कुटीर उद्योग में सफलता की तरफ अग्रसर है। अधिवेशन में आई पटना की चर्चित महिला शेयर ब्रोकर **सरोज गुटगुटिया** ने पुरुष प्रधान शेयर व्यवसाय के क्षेत्र में मारवाड़ी महिला होने को पुरुष से समानता का प्रमाण बताया।

मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगदीश चन्द्र मिश्र पप्पु का कहना है कि अंग क्षेत्र का मारवाड़ी समुदाय व्यवसाय बढ़ाने में अग्रणी है। मुंगेर के व्यापारिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विकास में मारवाड़ी समुदाय ने सकारात्मक भूमिका निभाई है।

नारी सशक्त है और रहेगी : सरोज गुटगुटिया

मुंगेर, १२ जनवरी। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सरोज गुटगुटिया ने कहा कि नारी तो सशक्त है और सशक्त रहेगी। कौन कहता है कि वह कमजोर है जिस धरती पर हम खड़े हैं ये इमारत खड़ी है जो अपनी कोख से अन्न, जल, धातु, रत्न देती है। जो अपनी छाती पर हल चलाने वाले का पेट भरती है। क्या वह कमजोर है ? तो नारी कैसे कमजोर है ? लेकिन नारी कमजोर हो जाती है प्यार में क्योंकि पुरुष को सर्वस्व समर्पण कर देती हैं वह कमजोर हो जाती है। क्योंकि उसकी ममता को संतान का आसरा चाहिए वे कमजोर हो जाती हैं क्योंकि वह सुदीर्घ अनुभव से जानती है कि परिवार का आंतरिक केन्द्र बिन्दु वही है। अत: उसका अपरिमित और अतुलनीय धैर्य ही परिवार के विघटन को बचा सकता है। वह कमजोर है क्योंकि वह सहज रूप से सबको जोड़कर रखना चाहती है और रखती है। वह कमजोर है क्योंकि पति परमेश्वर निकम्मे आवारा और बेरोजगार हो, परिवार चलाने के दायित्व से पलायन कर जाये पर वे सतत् संघर्ष करती है। नारी पुरुष से छली जाने पर भी उसे छोड़ नहीं पाती है, क्योंकि उसके अंतिम निर्णय में बुद्धि के स्थान पर हृदय, स्वार्थ के स्थान पर त्याग, बल और हिंसा के स्थान पर सहिष्णुता और दया, छुद्रता के स्थान पर विशालता हावी हो जाती है। उन्होंने युवा बहनों से कहा कि आप अपनी प्राथमिकताएँ स्वयं निर्धारित करें। यह प्राथमिकताएं समाज में मान्य प्राथमिकताओं के अनुरूप होने चाहिए। शिक्षा का अर्थ बी. ए., कर लेना नहीं है बल्कि ऐसा ज्ञान जो आपको अर्थ और सत्ता के तंत्र पर पकड़ बनाने में मददगार हो तथा नारी समाज की स्थिति में व्यापक और स्थायी सुधार के लिये निर्णय लेने वाला हो।

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

कहानी

पकड़

नथमल केडिया

अरे मित रामरतन! बहुत दिनों से दिखा है यार। आजकल तो हमलोगों की सुधि बिल्कुल भी नहीं लेता। बहुत बड़ा आदमी बन गया न तूँ?

तीन चार महिनों से रामरतन जब भी अपने पुराने मुहल्ले में आता है उसे अपने संगी-साथियों से ये सब बातें सुननी पड़ती है। पर वह जानता है कि इन लोगों के मन में मेरे प्रति प्रेम का दरिया बहता है इसीलिए उसका हृदय भी भींग-भींग जाता है। पर आज इन लोगों के बीच वह देवकिशन को देख आश्चर्य से जैसे आकाश से गिर पड़ा। देवकिशन भी तो पाँच वर्ष पूर्व अपने नये फ्लैट में चला गया था। फिर यह यहाँ कैसे? पर इस बात को उसने अपने मन के भीतर ही दबा लिया और देवकिशन को सम्बोधित कर ही बोला- 'क्या करूँ दोस्त! घर गृहस्थी से निकलना बहुत ही मुश्किल होता है। लड़का भी सबेरे-सबेरे काम पर निकल जाता है और तूँ तो जानता है मैं भी नौकरी करता हूँ। आजकल एक आदमी की कमाई से कहाँ पूरा पड़ता है? महँगाई कितनी बढ़ गई है और बढ़ती ही जा रही है। हमारे जैसे लोगों का तो भगवान ही मालिक है।'

रामरतन और देवकिशन दोनों मित। बचपन और जवानी बड़ा बाजार के इसी मुहल्ले बल्कि कहना चाहिये इसी मकान में बीती। दोनों के पास एक-एक कमरा तथा छत पर एक-एक रसोई घर। दुःख-सुख में मकान के सभी वासिन्दे एक साथ। यह तो नहीं कि आपस में कभी झगड़ा नहीं होता था पर थोड़ी देर बाद सब वैसे के वैसे। सबका आपस में भाईचारा। एक दूसरे के बालकों को डपट देना ही नहीं उनके थप्पड़ तक लगा देने में कोई हिचक नहीं ऐसा आपस में सम्बन्ध था। और रामरतन तथा देवकिशन तो एक दूसरे से इतने घुले-मिले जैसे कोई पूर्वजन्म का सम्बन्ध हो। मकान के सभी लोगों को लगता कि दो सगे भाई भी इनसे ज्यादा प्रेम से क्या रहते होंगे? अपने प्रेम को ज्यादा पुख्ता बनाने के लिए दोनों दोस्त एक दिन धर्मभाई बन गये, साथ में उनकी पत्नियाँ भी धर्म बहिन बन गई।

रामरतन और देवकिशन जब कभी भी मिलते अपनी पुरानी बातों पर उतर आते। ओह! कितने अच्छे दिन थे वे। आपस में कभी मतभेद नहीं हुआ। मन मुटाव की तो बात ही कहाँ?

पर मकान में रहने वाले भी जानते हैं कि एक बात में उनके विचार कभी नहीं मिले।

रामरतन ने अपने लड़कों को, जिस स्कूल में मध्यम श्रेणी परिवार के बच्चे पढ़ते थे उसमें दाखिला दिलवाया। परन्तु देवकिशन ने अपने लड़के को सम्पन्न परिवारों के लड़के जिस स्कूल में पढ़ते थे उसमें दाखिला करवाया। वह हरदम कहा करता देख रामरतन! अपनी जिन्दगी जिस स्तर पर बीत रही है वह तो अपने जानते हैं पर लड़कों की जिन्दगी तो सुधार दें। क्या हुआ यदि इसके लिए ज्यादा पीस चुकानी पड़े।? उनके जूते ड्रेस तथा स्टेन्डर्ड मेन्टेन रखने के लिए अपनी समाई के बराबर खरच करना पड़े। वहाँ सब बड़े आदमियों के लड़के पढ़ते हैं उनके साथ मेल-मिलाप दोस्ती होनी भी बड़ी बात है।

परन्तु रामरतन का दुर्भाग्य! उसकी बुद्धि ने कभी भी मित की बात का मर्म नहीं समझा। वह एक ही जवाब देता-पढ़ाई तो उन स्कूलों में जिस तरह की होती है वैसी ही इन स्कूलों में भी होती है। हाँ! वहाँ टीमराम ज्यादा है। फिर उनके लड़के तो सब, कारों में आते हैं और गाहे बगाहे सैंकड़ों रुपये खर्च कर देते हैं। देख कर या तो अपने लड़कों के मन में हीन भावना घर कर लेती है अथवा वे भी अपनी औकात से ज्यादा खर्च करना शुरू कर देते हैं। दोनों ओर नुकसान ही नुकसान है।

इधर देवकिशन को अपनी बात पूरी तौर पर जंची हुई थी। उसने लड़के को हर समय ऊँचे स्टेन्डर्ड वाली स्कूल में तालीम दिलवायी। उसके लिए उसे अपने कई जरूरी खर्च भी कम करने पड़े। एक दो बार यह भी नौबत आई कि स्कूल की टूर का खर्च जुटाने के लिए पत्नी का एक-आध गहना भी बेचना पड़ा पर हाँ! जब भी लड़के की पढ़ाई मुत्तल्लिक कोई चर्चा छिड़ती उसके मन में एक बड़प्पन का भाव अवश्य रहता।

पर छोड़ों यह सब बातें। इनको घटित हुए एक लम्बा अर्सा बीत गया। आज की स्थिति यह है कि देवकिशन व रामरतन दोनों के लड़के स्कूल कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर अपने-अपने धंधों को सम्हाल रहे हैं। जैसी कि देवकिशन को उम्मीद तो उसका लड़का अपने कॉलेज के एक दोस्त की कम्पनी में परचेजर के पद पर अच्छी कमाई कर रहा है। इधर रामरतन का लड़का भी अपने धंधे को मजे में सम्हाल रहा है। घर में किसी तरह की कोई कमी या अभाव नहीं है।

यहाँ एक बात और बता दूँ कि जैसा मैंने पहले बताया था कि यहाँ के मकान में दोनों के एक-एक कमरा था। लड़कों की विवाह योग्य उम्र होने पर दूसरे कमरे को अत्यन्त आवश्यकता पैदा हुई तब इन लोगों ने आसपास के मकानों में कमरे की तलाश करनी शुरू की पर प्रथम तो कमरा मिलना ही बहुत मुश्किल और यदि मिल भी जाय तो इतना महंगा कि इन लोगों की पहुँच से बाहर। इसलिए दोनों बड़ाबाजार से दूर अपना फ्लैट खरीद कर चले गये। हाँ लोकेलिटी इनलोगों ने अपने स्टेन्डर्ड के अनुसार चुनी। तो आज इन पुराने परिचितों के बीच देवकिशन कैसे? वह इस वक्त यहाँ पर क्यूँ?

देवकिशन का वाकया थोड़ा अलग है। इनका लड़का जब पढ़ाई पूरी कर अपने धंधे में लग गया और कमाने लगा तो पिता को उसका विवाह करने की धुन लग गई पर लड़के को भी एक अलग

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

कमरा चाहिये। देवकिशन ने लड़के को समझाया-अपने छत पर वाला रसोई घर सोने-बैठने लायक ठीक करा लेंगे। मैं और तुम्हारी माँ उसमें सो जायेंगे। जैसे-जैसे काम तो चल ही जायेगा। पर लड़के को इस मकान का स्टेन्डर्ड अपने लायक नहीं लग रहा था। उसने अपनी जमा की हुई रकम तथा अपनी ऑफिस से लोन की बात कर फ्लैट देखना शुरू कर दिया था। पर जो फ्लैट उसे पसन्द आया उसमें इतने रुपयों से काम नहीं चल सकता था इसलिए उसने माँ-बाप से कहा-अपने यह कमरा तथा रसोई घर बिक्री कर दे तथा इसका रुपया खड़ा कर ले। उसके प्रस्ताव पर देवकिशन तो राजी हो गया पर माँ के मन में न जाने क्या बात आई कि वह नट गई, बोली- मैं यह कमरा नहीं बेचने दूँगी और चाहे जो करो। यदि एक दम ही गाड़ी अटक जाय तो मेरे एक-दो गहने चाहे बेच देना वह मैं दे दूँगी पर मेरे जीते जी यह कमरा मैं अवश्य रखूँगी। आखिर में उसी की बात रही और उसके दो गहने बेच कर वह फ्लैट ले लिया गया।

नये फ्लैट में यह परिवार बहुत आनन्द के साथ रहने लगा। समय पाकर देवकिशन के एक पौत्र तथा एक पौती भी हो गई थी। देवकिशन निज में भी एक व्यापारी फर्म में एकाउन्टेन्ट के पद पर था तथा उसकी तनख्वा एक हजार प्रतिमाह थी। पर अब लड़का अपना स्टेन्डर्ड बहुत ऊंचा समझने लगा था। वह पिता को नोकरी छोड़ने के लिए जोर देने लगा। देवकिशन ने उसे दो-तीन बार समझाया भी-इसमें अपना क्या बिगड़ता है? एक-तो मेरा समय ठीक साथ कट जाता है दूसरे हर महीने घर में कुछ आमदनी हो जाती है। पर लड़के के गले में यह बात नहीं उतरी। वह बोला-अब अपने किस बात की कमी है। लोग जब जानेंगे कि बाप तो अभी भी हजार आठ सौ रुपये में अपनी जूतियाँ घिस रहा है तो अपनी इज्जत कहां रहेगी? हार कर बाप को लड़के की बात माननी पड़ी और उसने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और उसके बाद अपना समय कुछ तो भजन-पूजन और कुछ पोते-पोती के साथ रमने में बिताने लगा। दोनों पोते-पोती भी दादाजी के साथ इतने घुल-मिल गये कि इनके बिना उनको चैन ही नहीं।

पर कुछ दिनों बाद लड़के की कम्पनी में स्टोर्स स्पलाई करने वाले व्यापारी घर में आने लगे। वे लोग गप्प-सप्प करते, नाश्ता-पानी करते साथ ही ताश का खेल भी जमने लगा। धीरे-धीरे यह ताश पार्टी सप्ताह में तीन-चार दिन जमने लगी। बन्द किवाड़ों के पीछे पीना पिलाना भी शुरू हो गया।

फ्लैट में बेड रूम तो दो ही थे और यह सब काम माँ-बाप के सामने तो हो नहीं सकते, कुछ तो आँखों की शरम चाहिये ही। हाँ, पत्नी चुप थी। उसके दिमाग में था कि यह सब बिजनेस का एक हिस्सा है और फिर वे व्यापारी उसके लिए तरह-तरह के प्रेजेन्ट भी लाते। वह उन्हीं में मगन थी। पर माँ को ये रंगढंग बिल्कुल भी अच्छे नहीं लगे, बोली-यह गृहस्थ का घर है। महीने में एक आध बार बैठक बाजी हो तो ठीक है पर रोज-रोज का यह जमावड़ा कैसे चल सकता है? पर उन पति-पत्नी को माँ की यह बात सुनने और ध्यान देने की फुर्सत क्यों हो? दोनों ने चुप्पी साध ली।

कुछ दिनों तक ऐसा चलता रहा पर जब माँ और ज्यादा सास पना दिखाने लगी तो एक दिन बहू ने कहा--माँजी! मैं जानती हूँ आपको यह सब नहीं सुहाता है पर मैं क्या करूँ? मेरा तो कोई बस नहीं है। मैंने भी उनसे दो-तीन बार यह बात कही तो मुझे यह कह कर चुप कर दिया कि यह मेरा बिजनेस का मामला है इसमें कोई कुछ नहीं बोलेगा। **और माँजी एक बात यह है यहाँ पर रूम तो दो ही है। अब बच्चें भी सयाने होने लगे हैं. आप लोग उचित समझें तो अपने पुराने मकान में चले जाये। खरचा यहाँ से महीने के महीने आपके पास पहुँच जायेगा।**

सास एक बार तो हक्की-बक्की रह गई। थोड़ी देर बाद शान्तिपूर्वक बोली-बहू! तूँ जो बात कहती है वही ठीक है। दो दिन आगे दो दिन पीछे यह काम तो होता ही। अच्छा है अभी हो जाय। मैंने इस स्थिति को भाँप कर ही कमरा बिक्री नहीं करने दिया था।

इस बात के दो-चार दिन बाद वे दोनों पति-पत्नी अपने पुराने मोहल्ले के पुराने मकान में आ गये। अड़ोसी-पड़ोसियों ने पूछा तो उनसे कहा- वहाँ कहाँ जंगल में जा पड़े थे? न कोई संगी न कोई साथी। हमलोगों का मन वहाँ बिल्कुल भी नहीं लगा। मन्दिर, भगवान के दर्शन, गंगा स्नान सभी छूट गये। इतने दिन लड़के ने बहुत हाथाजोड़ी, अनुनय-विनय कर कर आने नहीं दिया पर अब हमलोगों ने साफ कह दिया कि हमलोग तो वहाँ जायेंगे ही तब बैचारों ने उदास मन यहाँ आने दिया।

लड़के के पास से महीने की पाँच सौ रुपये आ जाते। देवकिशन दिन भर इधर-बैठ गप्पे हाँक कर अपना समय काटे क्योंकि कहीं नौकरी करे तो लड़के की इज्जत पर आँच आवे। नहीं तो समय अच्छी तरह कट जाता दूसरे महीने की महीने हजार बारह सौ रुपये घर में आते। और सौ बात की एक बात यह है कि अपने हाथ से की गई कमाई की बरकत व शान ही और होती है। अब तो एक तरह से हाथ ही पसारना होता है।

पर आज रामतरन को देखा तो देवकिशन अपनी ये सारी बातें भूल गया। वे दोनों अपनी पुरानी यादों में इतने रम गये कि समय का ख्याल ही नहीं रहा। एकाएक रामरतन बोला-अरे देख! कितनी देरी हो गई। अच्छा तो अब मैं चलता हूँ। इतनी बात बोलते-बोलते वह जाने को तैयार हो गया पर अब उससे रहा नहीं गया। जाने के पहले दोस्त से पूछ बैठा-यहाँ कैसे आ गये? देवकिशन ने कहा-लड़केके संगी-साथी सब बड़ी-बड़ी कम्पनियों के मालिक हैं और वे सब उसको चाहते भी बहुत है। इतना कि हर समय पर आते रहते हैं। अब वहाँ जगह की कमी भी होने लगी तो हमलोगों ने स्वयं ही सोचा कि हमलोग अपने पुराने मकान में ही सुखी रहेंगे।

इतना बोलते-बोलते न जाने देवकिशन के क्या मन में आया कि मित्र का हाथ जोर से पकड़ लिया और एक तरह से अनुनय विनय करता-सा बोला-कुछ देर और बैठ न? पर रामरतन बोला-नहीं मित्र! घर पहुँचते-पहुंचते रात के दस-साढ़े दस बज जायेंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि मेरे दोनों पोते-पोती मेरे पास ही सोते हैं। जब तक उनको कोई कहानी नहीं सुनाऊं अथवा बात नहीं करूँ उन्हें नींद ही नहीं आती।

उसकी यह बात सुनते ही देवकिशन की आँखों में आंसू झलक पड़े। साथ ही उसके हाथ की पकड़ भी ढीली पड़ गई। ●

जुबान की कीमत, मारवाड़ की हकीकत।

चालू वर्ष के लिए अभी से टैक्स प्लानिंग करें

श्री. नारायण जैन, इन्कम टैक्स एडवोकेट

गत केन्द्रीय बजट में वित्त मंत्री ने आय से छूट की सीमा को बढ़ा दिया है। कर प्रावधानों का समुचित लाभ उठाया जा सके तो 20 लाख रुपये तक भी परिवार की आय होने पर इनकम टैक्स नहीं लगेगा। ऐसे में अब टैक्स की दर काफी कम कर दी गयी है। आइये नये वर्ष में देखिये आप कानून के दायरे में कितनी अच्छी टैक्स प्लानिंग कर सकते हैं।

धारा 80-सी के तहत छूट : जैसा कि विदित है चालू वित्तीय वर्ष के संदर्भ में धारा 88 के तहत कर से रिबेट के बजाय धारा 80सी के तहत आय से छूट का लाभ मिल सकेगा। करदाताओं को चाहिए कि अधिकतम 1 लाख रुपये तक मिलने वाली छूट का पूरा लाभ उठायें। ध्यान रहे यह छूट व्यक्तिगत करदाताओं व हिन्दू अविभाजित परिवारों को ही उपलब्ध है। अब धारा 80 सी के तहत निर्दिष्ट किसी भी मद के योग्य करदाता 1 लाख रुपये तक की कुल सीमा के भीतर निवेश कर सकता है। पहले हाउसिंग लोन किस्तों के भुगतान के लिए 20 हजार रु., एनएससी, पीपीएफ आदि के लिए कुल 70 हजार रुपये, बच्चे की ट्यूशन फीस के संदर्भ में 12 हजार रु. प्रति वर्ष प्रति बच्चे के लिए (अधिकतम दो बच्चों के लिए) धारा 88 के तहत रिबेट के लिए मान्य थी। यह सीमाएं धारा 80सी के लिए हटा दी गयी है। इससे सरलता आयेगी।

आयकर से छूट की सीमा : सामान्य व्यक्तिगत करदाता, हिन्दू अविभाजित परिवार, व्यक्तियों के समुदाय के लिए कर से छूट योग्य आय की सीमा चालू वित्त वर्ष के लिए 1 लाख रु. है। महिला करदाताओं के लिए छूट की राशि 135000 तथा वरिष्ठ नागरिकों के लिए 1 लाख 85 हजार रुपये हैं। धारा 80 सी की 1 लाख रुपये की पूरी छूट का लाभ साधारण करदाता उठा सके तो उसे दो लाख रुपये तक की कर योग्य आय होने पर भी टैक्स नहीं देना पड़ेगा।

एक परिवार के लिए टैक्स प्लानिंग

किसी परिवार में वरिष्ठ नागरिक व महिलाओं सहित सात (7) फाइलें हों तो सिर्फ धारा 80 सी का पूरा लाभ उठायें तो भी कुल 20 लाख रुपये तक कर योग्य आय पर भी कोई आयकर नहीं लगेगा, जो निम्न उदाहरण से स्पष्ट है:-

परिवार के लिए कर से छूट

	छूट	धारा 80 सी की छूट	कुल
वरिष्ठ नागरिक पुरुष	185000	एक लाख	285000
वरिष्ठ नागरिक महिला	185000	एक लाख	285000
पुरुष	135000	एक लाख	200000
महिला	135000	एक लाख	235000
लड़का वयस्क	100000	एक लाख	200000
लड़की वयस्क	135000	एक लाख	235000
हिन्दू अविभाजित परिवार	100000	एक लाख	200000

दो व्यक्ति द्वारा मकान के लिए ऋण लिया..... 300000
गया हो तो उस पर डेढ़ लाख रु. के हिसाब से मान्य ब्याज
परिवार के दो सदस्यों द्वारा 10 हजार रु..... 20000
प्रति व्यक्ति मेडिकल इंश्योरेंस पर धारा 80डी के तहत छूट
शिक्षा हेतु लिए हुए ऋण पर ब्याज धारा..... 40000
80ई के तहत (अनुमानित राशियों पर आधारित)
परिवार के लिए कुल कर से छूट योग्य आय .....
20,00,000

उपरोक्त परिवार के दो सदस्यों ने स्वयं के फ्लैट खरीदने के लिए हाउसिंग लोन लिया हो तथा उस पर ब्याज डेढ़ लाख रुपया या उससे अधिक सालाना देने पड़े तो ऐसे दोनों व्यक्ति डेढ़ लाख रुपया प्रतिवर्ष के हिसाब से 3 लाख की अतिरिक्त आय शिक्षा ऋण पर ब्याज छूट योग्य दान, मेडिकल बीमा प्रीमियम तथा अन्य छूटें भी मिलती हैं। हर व्यक्ति को चाहिए कि कानून छूट के अनुसार अपनी आय विदेश व कर से छूट का लाभ लेने की समुचित टैक्स प्लानिंग वर्ष के दौरान ही करें। जब कानूनन इतनी छूट उपलब्ध है तो पेचीदे तरीके अपनाने अनुचित है।

कर का भुगतान (इस वर्ष के लिए दरें) समुचित छूटों का लाभ लेने के बाद कोई टैक्स बनता है तो खुशी से ऐसा टैक्स अदा करना उचित है। अब चालू वर्ष के लिए टैक्स की दरें इस प्रकार हैं।

(सामान्य व्यक्तिगत करदाता के लिए)

एक लाख रुपये तक	0%
एक लाख रु. से 1 लाख 50 हजार तक	10%
एक लाख 50 हजार दस रुपया से 250000 रु तक	20%
250000 रुपये से ऊपर	30%
10 लाख रु, से ऊपर कर योग्य आय होने पर	10%
सरचाज भी देय है। सभी करदाताओं द्वारा शिक्षा शेश भी	2%

महिला करदाताओं के लिए

135000 रु. तक	0%
135000 रु. से 150000 रु. तक	10%
150010 से 250000 रु. तक	20%
250000 रु. से ऊपर	30%

वरिष्ठ नागरिकों के लिए

185000 रु. तक	0%
185010 रु. से 250000 तक	20%
250000 रु. से ऊपर आय पर	30%

कुछ अन्य कर मुक्त आय : उपरोक्त छूटों के अलावा आजकल डिवीडेण्ड से होने वाली आय भी धारा 10(34) के तहत करमुक्त है। शेयरों की बिक्री (रजिस्टर्ड शेयर ब्रोकर के माध्यम से करने से) पर दीर्घकालीन पूंजीगत लाभ भी धारा 10(38) के तहत एक अक्टूबर, 2004 से मुक्त है। इक्विटी ओरिऐन्टेड म्युचुअल फंड की यूनिटों पर भी यह छूट उपलब्ध है।

(श्री नारायण जैन को प्रत्येक माह आयकर संबंधी विभिन्न विषयों पर समाज विकास में लिखने के लिए आमंत्रित किया गया है। -संपादक)

असम में हिन्दी भाषा–भाषी को आश्वासन

–जगन्नाथ पहाड़िया

(1) राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया का स्वागत करते हुए सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति एवं सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल। (2) सदस्यता अभियान उपसमिति के अध्यक्ष श्री आत्माराम सौंथलिया सभा को सम्बोधित करते हुए। पास बैठे हुए हैं सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, पूर्व मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार। (3) सम्मेलन भवन का भ्रमण करते हुए राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया। साथ दे रहे हैं सम्मेलन अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रविन्द्र कुमार लड़िया, श्री अरुण मल्लावत, श्री प्रेमचन्द सुरेलिया व श्री बंसीलाल बाहेती।

मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आयोजित स्वागत समारोह में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया से सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के द्वारा असम में हिन्दी भाषा–भाषी समाज की सुरक्षा के सवाल पर श्री पहाड़िया ने आश्वासन दिया कि वे असम की स्थिति के बारे में प्रधानमंत्री से बातचीत करेंगे। इस अवसर पर श्री पहाड़िया ने सम्मेलन द्वारा किये जा रहे समाज सुधार की विशेष रूप से प्रशंसा की। इस अवसर पर इन्होंने सम्मेलन भवन की भावी रूपरेखा का भी निरीक्षण किया एवं देश में बढ़ते जातिवाद पर चिंता व्यक्त की। इस अवसर पर श्री पहाड़िया जी का स्वागत करते हुए श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल ने शिक्षा क्षेत्र में अधिक सरकारी पहल की जरूरत पर जोर दिया। श्री आत्माराम सोंथलिया ने श्री पहाड़िया को एक ईमानदार राजनेता बताते हुए उनके कार्यों की चर्चा की। सम्मेलन के महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, श्री लोकनाथ डोकानिया ने भी अपने विचार रखे। श्री रवीन्द्र कुमार लडिया ने समाज विकास की प्रति भेंट की एवं श्री अरुण गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

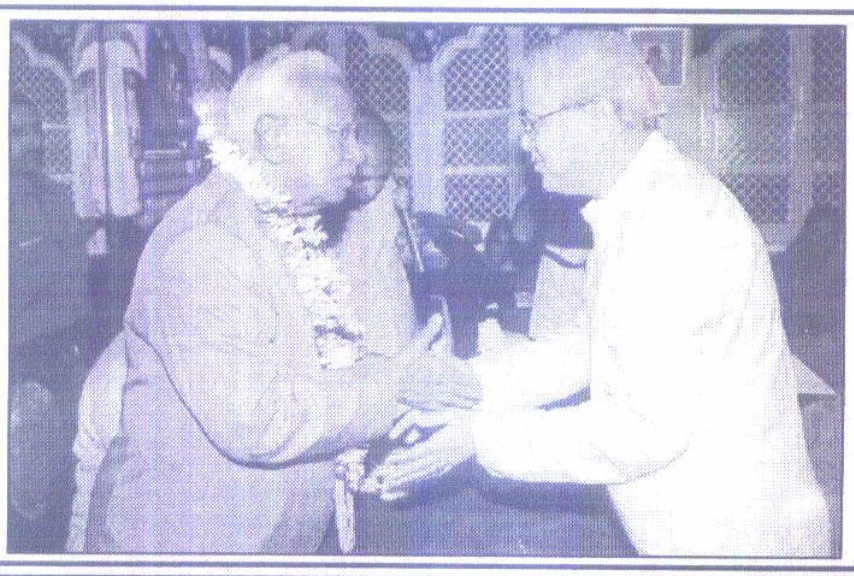

हरियाणा के राज्यपाल श्री ए. आर. किदवई का कोलकाता में स्वागत करते हुए सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा

विलास विनाश है।

मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जनवरी २००७ ▸ वर्ष ५७ ▸ अंक १

७२ वां स्थापना दिवस समारोह

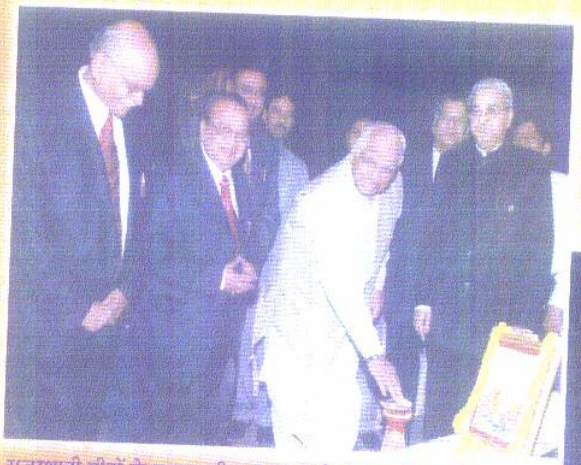

लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी ७२ वां स्थापना दिवस पर दीप प्रज्वलन करते हुए। साथ में हैं सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार एवं कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया।

राजस्थानी गीतों के सम्राट श्री गजानन वर्मा को सम्मानित करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा साथ दे रहे हैं रा. संयुक्त महामंत्री श्री रविन्द्र कुमार लड़िया।

(बाएं) सांस्कृतिक कार्यक्रम 'ओल्यूं आवे रे' के अवसर पर संगीत प्रस्तुत करते हुए श्री राजेश सादानी, संगीता, नीलमणी राठी, मारूति मोहता एवं राजीव माहेश्वरी। (दाएं) खचाखच भरा कलामन्दिर सभागार।

बिहार: २५ वां प्रादेशिक अधिवेशन

१

२

३

(१) उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथिगण केन्द्रीय जल संसाधन राज्य मंत्री श्री जयप्रकाश नारायण यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, बिहार के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री नथमल टिबड़ेवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा। (२) महिला सम्मेलन की प्रान्तीय अध्यक्षा निशा सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा वीना गुप्ता, महिला सम्मेलन की रा. अध्यक्षा अरुणा जैन, सरिता बजाज एवं सरोज जैन। (३) बिहार रजत जयन्ती अधिवेशन पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा। साथ में हैं श्री नथमल टिबड़ेवाल, श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, श्री कमल चोपानी, पूर्वोत्तर प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय मंगलूनिया, पूर्व उपाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल एवं श्री शंकर प्रसाद टेकड़ीवाल, पूर्व मंत्री बिहार सरकार।

सम्मेलन का वर्तमान स्वरूप - एक चिंतन

-: पुष्पा चोपड़ा :-

मारवाड़ी सम्मेलन से मेरा जुड़ाव 1978 में आयोजित भागलपुर अधिवेशन से हुआ जहां मुझे महिला मंत्री का भार सौंपा गया तब से लगातार अथक प्रयास के साथ मैंने बहनों को जागरुक कर एक सशक्त मंच बनाकर 1983 में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन पटना के श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल में कराया। 1985 में गोहाटी में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का गठन हुआ। महिला एवं युवा इसी परिवार व समाज की नींव है इसको मद्देनजर रख आदरणीय श्री नंदकिशोर जालान जी ने दोनों को स्वतंत्र प्रभार दिया ताकि समाज के तीनों विंग पुरुष-महिला एवं युवा अपने स्तर से कार्य कर समाज को सशक्त बनाएं - आज स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत हो गई है। हमारा परिवार बिखर कर तीन टुकड़ों में विभक्त हो गया। प्रौढ़-महिला एवं युवा। अब युवा मंच में भी महिला मंच अलग बन रहा है। आज समय की मांग है संगठित समाज, जबकि आज हमारा समाज बिखर गया है। इन तीनों का विशेष काम अधिवेशन कराना हो गया है। एक दिन का अधिवेशन - खर्च कम से कम दो लाख - उपस्थिति बहुत कम। विचार एवं प्लानिंग का वक्त ही नहीं रहता है। प्रस्ताव पारित तो हो जाते हैं पर उसका इम्पीलमेन्टेसन नहीं हो पाता है क्योंकि इसके लिए संगठित प्रयास एवं प्रबल इच्छा शक्ति की नितान्त आवश्यकता है जिसकेा अभाव अधिवेशनों में जाकर साफ नजर आता है। मेरे निम्न सुझाव पर गौर करने का कष्ट करें :-

(1) यथा संभव तीनों विंग का अधिवेशन साथ हो जिससे संगठन मजबूत होगा एवं सम्मेलन में पारित प्रस्तावों एवं निर्णयों में सर्वसम्मति होने पर समाज पर इसका असर अवश्य होगा। सामाजिक कुरीतियों आडम्बर - दिखावा, तलाक आदि पर काफी हद तक रोक लगाई जा सकेगी।

(2) महिला मंच - युवा मंच एवं सम्मेलन के पदाधिकारी त्रैमासिक बैठक कर समाज की दशा पर चिन्तन कर दो चार कामन प्रोग्राम तय करें। यह नियमावली भारतीय तथा प्रादेशिक स्तर पर लागू की जाए।

(3) राजनीति में हमारी भागीदारी शून्य के बराबर हैं, किस प्रकार ज्यादा संख्या में हमारे प्रतिनिधि आएँ यह विचारणीय है। महिला रिजर्वेशन का लाभ प्रत्येक समाज उठा रहा है तथा सचेत होकर इस दिशा में कार्यरत भी है और हम अपने को किंग मेकर कह कर ही खुश हो जाते हैं। समय की मांग को देखते हुए जिला एवं राज्यों के चुनाव में महिलाओं एवं युवाओं को ज्यादा संख्या में खड़ा करके उन्हें आर्थिक एवं मानसिक समर्थन दें।

(4) समाज के कमजोर तबके के लिए हमने आज तक कोई प्लानिंग ही नहीं की है इस दिशा में कार्य करना नितान्त आवश्यक है संगठन पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। हम व्यापारी हैं - हमें युवाओं - महिलाओं को व्यावसायिक ट्रेनिंग-लघु-कुटीर उद्योगों के लगाने में उनका दिशा-निर्देश तथा यथासंभव सहयोग करना होगा।

पिछले ग्यारह सालों में मैंने लघु-कुटीर उद्योगों के माध्यम से महिलाओं-लड़कियों को आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में काफी कार्य किया एवं अभूतपूर्व सफलता मिली। फिर हमारा समाज तो स्वयं में काफी सक्षम है - आवश्यकता है कमजोर वर्ग की पीड़ा को महसूस कर उन्हें जोड़ने की। ●

मारवाड़ी समाज : एक चिंतन

-: लोकनाथ डोकानिया :-

यह सच है कि समाज में शिक्षा का प्रचार-प्रसार काफी तेजी से हुआ है। डाक्टर, इंजीनियर, सी.ए. एवं राजनीति के क्षेत्र में हमारी युवा पीढ़ी का ध्यान जा रहा है। यह सुखद भविष्य का परिचायक तो है पर साथ ही पश्चिमी संस्कारों का जहर हमारी युवा पीढ़ी को जो दिशाहीन बना रहा है उस पर गंभीरता से चिंतन करना होगा। हमें दूसरों के गुणों को ही ग्रहण करने की कोशिश करनी चाहिए। युवा पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के मध्य बढ़ती खाई को पाटना होगा। शिक्षित युवा वर्ग में बेकारी की संख्या न बढ़े इस पर सोचना होगा। समाज के अर्थाभाव में 25-30 वर्ष तक की कन्याओं के हाथ पीले नहीं हो पा रहे हैं। दहेज का दावानल हमें जला रहा है। परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाह इस दिशा में सार्थक कदम है पर इनकी परिणति सम्प्रति ऊंट के मुंह में जीरा की तरह है। इसको व्यापकता देने वालों के समक्ष कहीं भी कुछ भी दुर्लभ नहीं है। जहां चाह होती है, वहां राह भी होती है। आवश्यकता है विभिन्न विषयों पर गंभीर चिंतन की।

आज हमारा समाज दिशाहीन होता जा रहा है। समाज को आवश्यकता है बसंत कुमार पोद्दार, काली प्रसाद खेतान (बेरिस्टर), भंवरमल सिंघी, आनंदीलाल पोद्दार, मूलचंद अग्रवाल, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका जैसे नेताओं की जिनकी कथनी करनी एक सी हो। जो समाज को दिशा-निर्देश दे सके। जीवन में महान आदर्श अपनाने का परामर्श देते समय हमें यह भी सोचना होगा कि हम उन आदर्शों का पालन कहां तक कर पाते हैं। पूर्व में समाज सुधार के नाम पर जो भी कार्य हुए, आज के विवाह शादियों में उनका खुलकर उल्लंघन हो रहा है। अपसंस्कृति हावी होती जा रही है। हमारे समाज के लोग रोटरी, लायंस में जाकर सामाजिक कार्यों का बीड़ा उठा सकते हैं तो सम्मेलनों से जुड़कर ऐसा क्यों नहीं कर सकते? एक समय था जब कोई विपत्ति में होता था तो दस भाई उसकी सहायता को दौड़े आते थे। आज डूबते को तिनके का सहारा देने वाला या तो है ही नहीं या उनकी संख्या अंगुलियों पर गिनी जा सकती है। दान-पुण्य की भावना भी लुप्त होती जा रही है। दिखावा, प्रदर्शन एवं नाम चलाने की होड़ एवं उसके तलपट के आधार पर ही दान दिया जाने लगा है।

कहावत प्रसिद्ध है कि जहां न पहुंचे बैलगाड़ी, वहां पहुंचे मारवाड़ी। देश के कोने-कोने में मारवाड़ी समाज के लोग पाये जाते हैं। एड़ी-चोटी का पसीना एक कर हमारे पूर्वजों ने अपनी पहचान बनाई है। भारत का शायद ही कोई ऐसा कोना होगा जहां सामाजिक सेवा के संस्थान की नींव न रखी हों। पर, सब कुछ होते हुए भी आज हमारे सामने सबसे अहम् सवाल हमारे अस्तित्व का आ खड़ा हुआ है। हाल ही में असम के लोमहर्षक हृदयविदारक घटना ने तो हमें झकझोर कर रख दिया है। सामूहिक रूप से चुन-चुन कर मारवाड़ी समाज को निशाना बनाया जाना बहुत ही चिंताजनक विषय है। सिर्फ असम ही क्यों बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र आदि प्रांतों से भी तो कोई सुविधाजनक समाचार नहीं मिल रहे हैं। बिहार में कई स्थानों से मारवाड़ी समाज के लोगों को बिस्तर गोल करके नौ-दो-ग्यारह होना पड़ा है। भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को यह मौलिक अधिकार प्रदान करता है कि वह चाहे जहां भी रह सकता है। शिक्षा प्राप्त कर सकता है। व्यवसाय कर सकता है। ●

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

मेरे संकल्पों की घोषणा :

(श्री श्याम सुन्दर बगड़िया सम्मेलन से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं, सम्मेलन इनकी भावना को प्रणाम करता है। –सम्पादक)

प्रियवर/मान्यवर,

सप्रेम-सादर नमस्कार! अनुरोध : थोड़ा समय दें, इसे पढ़ें।

15 जून 2004 को पुत्र अनुष एवं विशेष रूप से 09 फरवरी 2005 को प्राणप्रिया सखी चन्दा के दिव्यलोक गमन ने मुझे अन्तर तक झकझोर दिया। 19 नवम्बर 2005 को मेरा 75वाँ जन्मदिन था, मन खिन्न था। जन्मदिन किसी भी रूप में मनाने की इच्छा न थी-मित्रों के आग्रह को भी स्वीकार न किया। तथापि कतिपय मित्र निवास पर आये-सान्त्वना व स्नेह के उपहार लेकर, गीत व भजनों की भावपूर्ण प्रस्तुति से वातावरण को सुरम्य किया। उक्त अवसर पर रवि, नीलिमा व बेबी मेघा एवं मित्रों की उपस्थिति में अपने पूर्व नियोजित दो संकल्पों की घोषणा की-

<u>देहदान</u> : निष्प्राण होने के पश्चात् मेरा सम्पूर्ण शरीर मानव हितार्थ/चिकित्सीय शोध हेतु दे दिया जाय (यानी अग्नि या विद्युत उपकरण से नष्ट न किया जाय)। यही जीवन का अंतिम धर्म है, अंतिम कर्तव्य है। तद्नुसार 24-05-2006 को मैंने शपथ-पत्र द्वारा मृत शरीर Medical College, Kolkata (Anatomy Dept., Ph. 2241 4901 (Eatn. 2010) को समर्पित (Pledge) कर दिया है। संदर्भ के दो कागज संलग्न है।

आडम्बर/लोक दिखावा वर्जन : मरणोपरांत किसी प्रकार का पूजा-पाठ, श्राद्ध-कर्म (तेरहवीं, छमाहीं, वार्षिकी आदि) कुछ भी न उस समय, न भविष्य में कभी करें। शोक- श्रद्धांजलि सभा बैठक (घर या बाहर), विज्ञापन-सूचना कुछ भी न करें। निकटतम संबंधी/मित्रजनों को सामान्य भाव से सूचना दे सकते हैं। दूसरे शहर से किसी को भी आने की सख्त मनाही कर दें (सिवा प्राण बसे हैं जिनमें यानी पुत्री दीपा, स्नेहिल विनोद एवं कनिष्क रौनक के-सुविधानुसार यदि वे कोई स्वत: आयें। आस-पास के मित्रादि व पारिवारिक जन मिलने आ सकते हैं किन्तु वातावरण सहज रहे।

मेरी जीवन दृष्टि व तीन सूत्र : आत्मा का परमात्मा (अदृश्य पराशक्ति) में और शरीर का पंतचत्व में विलय होकर पुन: नवजीवन का प्रस्फुटन सृष्टि क्रम का, सृष्टि संरचना का परम सत्य है। निम्नलिखित सूत्रों ने मुझे बहुत प्रेरित किया है, कभी-कभी आत्मीय जनों को कहता भी हूँ- मेरे अनुसार इन सूत्रों में विश्व के लगभग सभी सद्ग्रंथों का सार समाहित है :-

1) अच्छा बनो, अच्छा करो (Be Good, Do Good)

2) तन-मन-धन की अनुकूलता (सन्तुलन, Harmony)

3) कथनी करनी में एक रूपता

-ईश्वर आनन्द, आदर्श, आशा, आस्था, सत्य समभाव, प्रेम, समर्पण, कर्म-ज्ञान-भक्ति का पर्याय है। घनीभूत बोध है, आत्मानुभूति है। वह निराकार है, अशरीरी है इसीलिए जन्म व मरण से परे हैं, नित्य है, सर्वत्र है, नेति-नेति है। किन्तु भाव रूप में प्राणिमात्र में सदा विद्यमान है, मार्गदर्शक है। इन सूत्रों को जितना समझा जा सके, कार्यान्वित किया जा सके, यही मेरा कार्य है, प्रयास है।

शेषांष :-

→ मेरे सभी चित्र नष्ट कर दें, कहीं पर भी रखें या लटकाये नहीं।

→ मेरे द्वारा कुछ पुस्तक/ग्रन्थ संग्रहित हैं। अच्छी पुस्तकों का चयन कर रखें या किसी सुपात्र या किसी लाइब्रेरी को दें। शेष पुस्तकों को हटा दे या नष्ट कर दें।

→ संस्थाओं की (विकास, संसद, अर्चना) फाइलों, कागजों को संबंधित व्यक्तियों तक पहुँचा दें।

→ मेरी साहित्यिक कृतियाँ (लेख, निबन्ध, कविताएँ आदि) डायरियाँ, कुछ प्रकाशित पुस्तकें, अखबारों में छपी हुई कतरने अधिकतर साधारण स्तर की होगी-मनोविनोद व स्वान्त: सुखांय लिखता-छपवाता रहता हूँ। फिर भी कुछ अच्छी लगें तो रखें या किसी को दें। शेष सभी नष्ट कर दें।

→ परम पूज्य नानाजी-नानीजी (स्व० दुर्गादत्तजी-बसन्तीदेवी मोदी), बड़े मामाजी-मामीजी (महावीरप्रसादजी-गंगादेवी), छोटे मामाजी-मामीजी (लक्ष्मीनारायणजी-तारादेवी) के संरक्षण स्नेह-ममता का ऋण-शोध कभी नहीं कर पाऊंगा- जो कुछ भी हूँ उन्हीं की कृती हूँ। अनवरत चरण वन्दन!

→ कुछेक अंतरंग मित्र एवं पारिवारिक जनों का साथ जीवन-यात्रा में आनन्द, प्रेरणा व प्रगति का कारण रहा; साहित्यिक लगाव एवं मानवीय मूल्यों को समझने में सहायक रहा है। उनमें से कुछेक को (अत्यन्त शीमित संख्या में) यह पत्र प्रेषित है, इस भावना से कि मेरे संकल्पों की रक्षा करने में प्रसन्नमना सहयोग करें।

→ जीवन में मुझसे कभी कर्मणा-वाचा या उपर्युक्त विचारों से आपको क्लेश या असहमति हुई हो तो मुझे क्षमा करें।

हरि ॐ!

सदैव आपका

श्याम बगड़िया

(श्यामसुन्दर बगड़िया)

6/2, शरत बोस रोड, कोलकाता-20

गणतंत्र दिवस पर विशेष

महामहिम राष्ट्रपति का पुस्तक प्रेम

अच्छी-अच्छी पुस्तकों के संपर्क में रहने और उनका अध्ययन करने से सचमुच जीवन कितना समृद्ध बन सकता है। पुस्तक-प्रेमियों के लिए पुस्तकें ही उनका सर्वोत्तम और स्थायी मित्र बन जाती है। ये पुस्तकें कभी-कभी तो हमारे सामने ही अस्तित्व में आती हैं, जन्म लेती हैं; लेकिन हमें जीवनभर अपनी जीवन-यात्रा के दौरान इनसे मार्गदर्शन मिलता है और यह मार्गदर्शन पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनंतकाल तक जारी रहता है। मैंने सन् 1953 में चेन्नई के मूर मार्केट के एक पुराने बुक स्टोर से एक पुस्तक खरीदी थी - **'लाइट फ्राम मेनी लौंस'**। पुस्तक के संपादक हैं, वॉस्टन, लिलियन ईचलर। सचमुच, यह पुस्तक मेरी **एक घनिष्ठ मित्र** बन गई थी और पचास वर्षों से भी अधिक समय तक उसे मैंने अपने साथ रखा। मैं उसे इतना ज्यादा प्रयोग में लाता था कि इतने समय में कई बार तो उसकी जिल्दसाजी करवानी पड़ी थी। पुस्तक के रूप में एक अच्छा मित्र यदि हमारे साथ है, तो हमारी समस्या में, मानसिक व्यथा में वह महान् लोगों के अनुभवों पर आधारित नुस्खे से हमारी समस्या को सुलझाती है, हमें सांत्वना देती है। और जब कभी आप अत्यधिक खुशी का अनुभव करने लगते हैं तो उस स्थिति में भी यह आपके मन को हलके से स्पर्श करके संतुलित भाव उत्पन्न करती है। पुस्तक के महत्त्व का अहसास मुझे एक बार और उस समय हुआ, जब मेरे एक मित्र - जो न्यायिक विभाग में हैं - ने सन् 2004 में उसी पुस्तक का नया संस्करण मुझे भेंट किया। पुस्तक भेंट करते हुए उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं आपको जो सबसे अच्छी वस्तु भेंट कर सकता हूँ, वह यही पुस्तक है। हो सकता है, अब से पचास वर्ष बाद यही पुस्तक अपने नए अवतार में अस्तित्व में आ जाए। सचमुच, देखा जाए तो पुस्तकों का जीवन तो शाश्वत होता है।

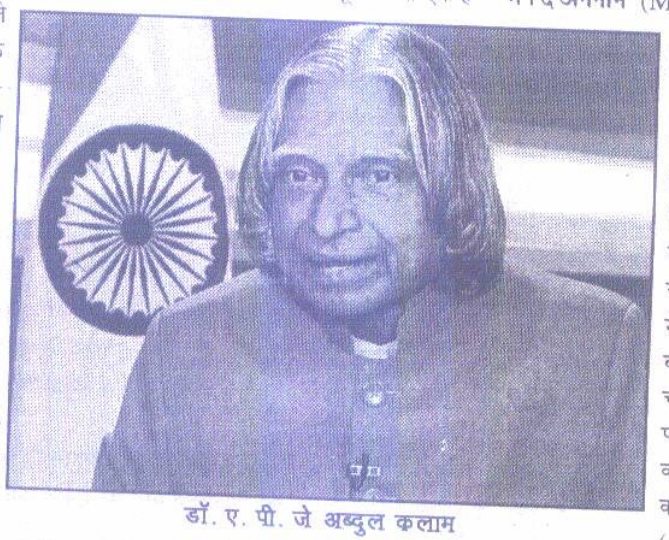

डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम

मेरी प्रिय पुस्तकें

अक्सर मुझे उन युवाओं के पत्र और ई-मेल संदेश मिलते रहते हैं, जिनसे मैं देश के विभिन्न भागों की यात्रा के दौरान मिलता हूँ। कई बार अपने पत्रों या ई-मेल में वे कुछ मार्मिक प्रश्न भी पूछते हैं, जैसे-

1. वे कौन सी पुस्तकें हैं, जो आपका वास्तविक मित्र बनी हुई है।
2. आजकल आप कौन सी पुस्तक पढ़ रहे हैं?

जवाब में मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं प्राय: सभी प्रकार की पुस्तकें पढ़ना पसन्द करता हूँ। और जो पुस्तकें सबसे अच्छी लगीं, उनमें से एक है - **'मैन द अननोन'** (Man the Unknown), जिसके लेखक नोबेल पुरस्कार विजेता चिकित्सक-दार्शनिक डॉ. अलेक्सिस कैरेल हैं। पुस्तक में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि किस प्रकार की पीड़ा की स्थिति में मन और शरीर-दोनों का उपचार किस प्रकार किया जाए, क्योंकि दोनों ही एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। विशेषकर ऐसे बच्चों को, जो डॉक्टर बनना चाहते हैं - यह पुस्तक जरूर पढ़नी चाहिए। इससे उन्हें सीखने को मिलेगा कि मनुष्य का शरीर कोई यांत्रिक प्रणाली नहीं है, (mechanical system) नहीं है; यह बुद्धि का एक ऐसा अवयव है, जो बहुत जटिल और संवेदनशील फीडबैक सिस्टम के अंतर्गत संचालित होता है। मानव शरीर-तंत्र वास्तव में मन एवं शरीर-रचना प्रणाली से बना एक समन्वित जीवंत पैकेज है। दूसरी पुस्तक जो मुझे सबसे अच्छी लगी और जिसका मैं पर्याप्त सम्मान करता हूँ, वह है - संत तिरुवल्लुवर की **'तिरुक्कुरल'**। यह पुस्तक, सचमुच, स्वयं में जनसाधारण के जीवन की उत्कृष्ट आचार संहिता है, जो किसी देश, भाषा, धर्म एवं संस्कृति से परे लेखक की सार्वभौमिक सोच को प्रतिबिंबित करती है। अब, तीसरी पुस्तक जो मुझे सबसे अच्छी लगी, वह है - **'लाइट फ्रॉम मेनी लैम्प्स'**। निस्संदेह अन्य ढेर सारी पुस्तकें भी हैं, जो मुझे बहुत अच्छी लगती है।

जैसा कि आप में से कई लोग जानते होंगे, ढेर सारे प्रतिष्ठित लेखक राष्ट्रपति भवन में मुझसे मिलने आते हैं और वे कई तरह की पुस्तकों के लेखन से संबंधित ज्ञान एवं अनुभव मेरे साथ बांटते हैं। आजकल मैं दो पुस्तकें पढ़ रहा हूँ। पहली है - मिचिओ काकू (Michio Kaku) की **'विजंस'** (Visions), जो सचमुच हमें विज्ञान की अनोखी दुनिया में ले जाती है। इसमें बताया गया है

कि किस तरह विज्ञान 21वीं शताब्दी में एक महान क्रांति लाने जा रहा है। और दूसरी पुस्तक है विख्यात नोबेल पुरस्कार विजेता अहमद जिवाली की '**वॉयेज थ्रू टाइम**' (Voyage Through Time) एक तो हमें कल्पना की दुनिया में ले जाती है और दूसरी यथार्थ की दुनिया में।

पवित्र रेखागणितीय पुस्तक
(Holy Geometry Book)

अल्बर्ट आइंस्टाइन के जीवन की एक घटना का जिक्र करना चाहूँगा। बारह वर्ष की अवस्था में उन्हें एक छोटी सी पुस्तक को लेकर एक विचित्र अनुभव हुआ। यह पुस्तक युक्लिडीय रेखागणित पर आधारित थी, जिसे उन्हें उनके शिक्षक मैक्स टैल्मड (Max Talmud) ने दी थी; इसे उन्होंने '**पवित्र रेखागणितीय पुस्तक**' (Holy Geometry Book) का नाम दिया था। आइंस्टाइन तो उसे एक चमत्कार मानते थे। उसी पुस्तक के माध्यम से आइंस्टाइन ने विशुद्ध चिंतन के क्षेत्र से अपना संपर्क बनाया। खर्चीली प्रयोगशालाओं या उपकरणों के बिना ही वे सार्वभौम सत्य की खोज करने में सफल हो गये थे, जो केवल मनुष्य की मस्तिष्क-शक्ति द्वारा ही संभव था। आइंस्टाइन के लिए गणित तो आनंद का एक असीमित स्रोत था- खासकर उस समय जब उसमें गूढ़ पहेलियाँ भी शामिल होती थीं।

प्रकाशकों का उद्देश्य और उसे प्राप्त करने के लिए जरूरी उत्साह

मैं अपनी पुस्तक (Vision 2020) 'भारत 2020' के संबंध में अपने एक अनुभव के बारे में आप लोगों को बताना चाहता हूँ। इसका कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। तमिल प्रकाशक, खासकर न्यू सेंचुरी बुक हाउस (NCBH) के प्रबंध निदेशक श्री राधाकृष्ण मूर्ति को पुस्तक के सार के रूप में 'विकसित भारत का अनुभव' अच्छा लगा। उन्होंने निश्चय किया कि वह पुस्तक को देश के कोने-कोने में जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े लोगों तक पहुँचायेंगे। उन्होंने कहा था कि वह पुस्तक की कम-से-कम एक लाख प्रतियाँ बेचेंगे। पेपरबैक संस्करण के साथ-साथ एक संस्करण प्राथमिक कक्षा के बच्चों के लिए और एक अन्य संस्करण वरिष्ठ कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए निकालकर उन्होंने अपना यह लक्ष्य पूरा भी कर लिया है। अधिक माँग, विभिन्न रिटेल नेटवर्कों के माध्यम से बिक्री में तेजी से वृद्धि और जागरुकता अभियान से पुस्तक को काफी कम कीमत पर उपलब्ध कराने में मदद मिली।

वास्तव में, पुस्तक को जनसाधारण तक पहुँचाने में प्रकाशक की अहम भूमिका होती है। श्री राधाकृष्ण मूर्ति, जिनकी उम्र इस समय 80 वर्ष से भी अधिक है, आजकल लोगों तक पुस्तकें और इसके माध्यम से ज्ञान पहुंचाने के अपने मिशन में लगे हुए हैं। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत बचपन में अपने सिर पर पुस्तकें लादकर बेचते हुए की थी। कई लेखकों ने मुझे बताया है कि उनसे प्रेरणा लेकर ही उन्होंने लेखक के रूप में अपना कैरियर चुना है।

निस्संदेह, पाठक विभिन्नता से युक्त और कम कीमतवाले विकल्प को ज्यादा पसंद करते हैं। आज हमें ऐसी कई मिशनरियों की जरूरत है, जो लाखों-करोड़ों की संख्या में भारतीय पुस्तकें देश के कोने-कोने में लोगों तक पहुँचा सके।

राष्ट्रपति भवन का पुस्तकालय

राष्ट्रपति भवन में बने पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का विशाल संग्रह है, जो देश के इतिहास और स्वतंत्रता से पूर्व के काल के शासकों की रुचियों और प्राथमिकताओं को प्रतिबिंबित करती है। राष्ट्रपति भवन की शोभा बढ़ाने वाले राष्ट्रपतियों ने भी इस अद्वितीय संग्रह में अपनी ओर से पुस्तकों का योगदान किया है। हम चाहते हैं कि पूरी दुनिया के लोग इस संग्रह में भागीदार बनें, इसका लाभ उठाऐं। इसके लिए एक कार्यक्रम के अंतर्गत हमने राष्ट्रपति भवन में उपलब्ध पुस्तकों की गणना का काम शुरू किया है। अब तक 7000 पुस्तकों की गणना की जा चुकी है, जिनमें कुल मिलाकर लगभग 50 लाख पृष्ठ हैं; अब इन्हें जल्द ही इंटरनेट पर उपलब्ध करा दिया जायेगा। मैं देश के युवाओं को किसी विशेष अवसर पर एक दिन राष्ट्रपति भवन के पुस्तकालय में व्यतीत करने के लिए आमंत्रित करने में हर्ष का अनुभव करूँगा।

उपसंहार

अभी हाल में मैं विल दुरांत द्वारा लिखित पुस्तक '**दे ग्रेटेस्ट माइंड्स एंड आइडियाज ऑफ ऑल टाइम्स**' (The Greatest Minds and ideas of all Times) पढ़ रहा था। उसमें एक अध्याय -'**विश्व की 100 बेहतरीन पुस्तकें**' में मैंने यूनानी, चीनी, अमेरिकी और कई अन्य यूरोपीय लेखकों की पुस्तकों की सूची देखी; लेकिन एक भी भारतीय लेखक की पुस्तक को उस सूची में स्थान नहीं मिला था।

ऐसा नहीं है कि भारत में महान् विचारों के लेखक ही नहीं हुए हैं; बल्कि असलियत यह है कि हमारी पुस्तकों को उपयुक्त स्थान तक नहीं पहुँचाया जा सका है। भारतीय पुस्तकें देश-विदेश के बड़े-बड़े पुस्तकालयों और विश्वविद्यालयों में पहुँचायी जाती हैं। कुछ मौकों पर हमें विभिन्न विश्वविद्यालयों में बड़े-बड़े लेखकों के नाम पर कक्षाएँ लगाकर उनके विचारों, उनके दर्शन का प्रचार भी करना होगा। अच्छी-अच्छी पुस्तकों को देश और दुनिया तक पहुँचाने के लिए देश की सरकार और प्रकाशकों को सामूहिक रूप से प्रयास करना चाहिए। प्रतिष्ठित लेखकों की अच्छी पुस्तकों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करवाकर उसका प्रकाशन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

मैं कुछ सलाह देना चाहूँगा - विशेषकर बच्चों के माता-पिता और अध्यापकों को। आप सभी अपने बच्चों और विद्यार्थियों को यह निर्देश देते हुए उनका उत्साहवर्द्धन करें - 'प्रतिदिन नियमित रूप से एक घंटा पढ़ाई में लगाओ। इससे तुम कुछ ही वर्षों में ज्ञान का एक केंद्र बन जाओगे।' अन्य लोगों के लिए मैं कहना चाहूँगा कि वे उपहार में- विशेषकर युवाओं को - पुस्तकें देने की आदत डालें। इस तरह के कार्यों से हमारे देश के युवा समृद्ध और सशक्त बनेंगे तथा इस प्रकार उन्हें हमारे समाज को ज्ञान और विवेक से युक्त समाज के रूप में परिवर्तित करने में मदद मिलेगी। ●

कुम्हारटोली सेवा समिति के हाइड्रोसील–हार्निया ऑपरेशन शिविर का उद्घाटन

कोलकाता–७ जनवरी। कुम्हारटोली सेवा समिति की ओर से एवं नन्हेलाल मोहिनीदेवी फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित हाइड्रोसील-हार्निया शिविर में १८० लोगों का सफल ऑपरेशन डॉ. एस.के. घोष एवं उनकी टीम ने किया। प्रधान वक्ता सन्मार्ग के मुख्य संपादक राम अवतार गुप्ता ने कहा कि आमदनी का कम से कम एक प्रतिशत समाजसेवा में खर्च करना चाहिए। मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि चिकित्सा की जिम्मेवारी सरकार की है। भारत में भी उसी तरह की चिकित्सा की व्यवस्था करती अलावा अन्य देशों की सरकारें चिकित्सा होनी चाहिए। विजय है। भारत में भी उसी तरह की तिवारी, राम अवतार पोद्दार, गुजरवासिया, लक्ष्मीकांत डागा ने समिति की सेवामूलक एल.एन. गुप्ता, त्रिलोक चंद कार्यों की सराहना की। समिति उपाध्यक्ष श्याम लाल जालान ने कहा कि सोनोग्राफी, एक्सरे आदि चिकित्सा किफायती कीमत पर समिति द्वारा की जाती है। कैम्प अध्यक्ष रामगोपाल बागला ने कहा कि दानदाता एवं सदस्यों के सहयोग से इतना बड़ा कैम्प सफल हुआ है। संयोजक चन्द्रकान्त सराफ ने अतिथियों का स्वागत किया। समिति के सचिव सुभाष मुरारका ने कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं धन्यवाद दिया। घनश्याम प्रसाद सोभासरिया, दामोदर प्रसाद विदावतका, रामप्रसाद भालोटिया, कृष्ण कुमार लोहारूका उपस्थित थे। समारोह को सफल बनाने में राजकुमार बागला, रतन जायसवाल, विशाल सराफ, संजय अग्रवाल, राजकुमार केडिया आदि सक्रिय थे। संगीता लोहिया की गणेश वंदना एवं स्वागत गान से समारोह का शुभारंभ हुआ। ●

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री राम अवतार सभा को सम्बोधित करते हुए। बैठे हैं विजय गुजरवासिया, नारायण प्रसाद माधोगढ़िया, राम अवतार गुप्ता, एल एन गुप्ता, सुभाष मुरारका एवं लक्ष्मीकांत तिवारी।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन - डिब्रूगढ़ शाखा

29.12.06। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की डिब्रूगढ़ शाखा की कार्यकारिणी की बैठक सम्मेलन के स्थायी सभापति श्री रामगोपाल मोदी के सभापतित्व में डिब्रूगढ़ में हुई जिसमें कई प्रकार के सुझावों पर चर्चा हुई। सर्वप्रथम गत कार्यकारिणी की सभा की कार्यवाही को सर्वसम्मति से पारित किया गया। बैठक में समाज के सभी सदस्यों की एक विस्तृत विवरणिका बनाने तथा मारवाड़ी समाज के जिन सदस्यों का नाम वोटर लिस्ट में नहीं है उनके नाम वोटरलिस्ट में दर्ज कराने के प्रयास करने का सुझाव प्राप्त हुआ। सम्मेलन के शाखाध्यक्ष के आह्वान पर निम्नलिखित सदस्यों ने स्वेच्छा से सम्मेलन कोष में हजार-हजार रुपये की राशि प्रदान की – सर्वश्री आर. जी. मोदी, बसन्त गाड़ोदिया, विजय खेमानी, राजकुमार अग्रवाल, राजकुमार तोदी, बनवारी लाल केजड़ीवाल, प्रसन्न कुमार केजड़ीवाल, श्यामसुन्दर देवड़ा, विश्वनाथ गाड़ोदिया, जेठमल बंग, डूंगरमल अग्रवाल, मनोहरलाल वर्मा, महेश जैन, सुरेन्द्र सोनावत एवं शैलेश जैन। सर्वश्री राधेश्याम ढूंढ़ एवं ओमप्रकाश शर्मा ने क्रमशः पांच-पांच सौ की राशि प्रदान की। सर्वसम्मति से श्री बसन्त गाड़ोदिया को पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के शिक्षा कोष के लिए डिब्रूगढ़ शाखा की ओर से प्रतिनिधि मनोनीत किया गया। श्री शैलेश जैन द्वारा धन्यवाद किया गया।

सदस्या हेतु अभियान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्यता हेतु 5000/- रुपया का ड्राफ्ट/चेक भेजकर सदस्यता प्राप्त की जा सकती है। सालाना सदस्यता शुल्क 500/- प्रत्येक वर्ष। सदस्यता अभियान में जो सज्जन 5 सदस्य बनायेंगे उनका नाम समाज विकास में ससम्मान प्रकाशित किया जायेगा। सदस्यता फार्म पृष्ठ 33 पर उपलब्ध।

प्रचारक चाहिए

देश के प्रायः सभी प्रान्तों में सम्मेलन की विचारधारा का प्रचार-प्रसार करने व सदस्यता बनाने हेतु सम्मेलन के प्रचारक पद हेतु समाज का कोई भी व्यक्ति इच्छुक हो तो आवेदन कर सकते हैं। योग्य उम्मीदवार को योग्यता के अनुसार श्रमिक दिया जायेगा।

''ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान''

लेखक : रीमा हुजा, पृष्ठ 1246, रु. 995

प्रकाशक : रूपा एंड कं.

हाल ही में प्रकाशित रीमा हुजा की पुस्तक ''ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान'' (अंग्रेजी) राजस्थान के इतिहास, भूगोल, राजनीति, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, आर्थिक उत्थान, लोकगीत, साहित्य, धर्म, कला, ज्ञान-विज्ञान, महिलाओं की स्थिति, राजा-रानियों की गाथाओं की एक ऐसी कहानी है जो पाषाण युग से लेकर आज के युग व आधुनिक राजस्थान की याला करती है। 1246 पृष्ठों का यह इतिहास विशेषज्ञों एवं साधारण पाठकों दोनों के लिए समान रूप से पठनीय है।

मारवाड़ी महिला समिति

जूनागढ़ : वस्त्र-वितरण कार्यक्रम आयोजित

22.12.06। जुगसाही पटना के सुभद्रा क्षेत्र में प्रतिष्ठा दिवस महासमारोह के अवसर पर मारवाड़ी महिला समिति, जूनागढ़ की ओर से दिव्य विद्यापीठ के छात्र-छात्राओं को कम्बल, शॉल, स्वेटर आदि शीतकालीन वस्त्र व खाने-पीने का सामान वितरित किया गया। कार्यक्रम में महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, आशा खेमका, चन्द्रकला अग्रवाल, कान्ता बंसल, चन्दा खेमका, लायन श्री माणिक चन्द अग्रवाल, सम्पादक श्री भार्गवरथी सामन्तराय, अच्युतानन्द पण्डा सहित दिव्य-जीवन संघ के सभापति प्रो. गोपबन्दु बेहरा, उपसभापति श्री फकीर नारायण पण्डा, सम्पादक श्री निरंजन महन्ती भी उपस्थित थे।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

मुजफ्फरपुर : स्थापना दिवस समारोह आयोजित

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्रीनथमल टिबड़ेवाल, प्रांतीय संयुक्त महामंत्री श्री किशोरीलाल अग्रवाल, प्रांतीय मंत्री श्री राजीव कुमार केजड़ीवाल, कार्यक्रम संयोजक श्री सीताराम बाजोरिया, श्री हरेकृष्ण तुलस्यान, गोशाला समिति के कोषाध्यक्ष श्री गोविंद प्रसाद केजड़ीवाल एवं गणमान्य व्यक्तियों ने सम्मेलन के स्थापना दिवस के अवसर पर 25 दिसम्बर 2006 को मुजफ्फरपुर गोशाला में गायों को गुड़/चना खिलाया।

श्री गोविन्द कानोड़िया निर्वाचित

पटना सिटी। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना सिटी शाखा के सचिव व प्रादेशिक राजनैतिक चेतना मंत्री श्री गोविन्द कानोड़िया **बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स** के कोषाध्यक्ष निर्वाचित किये गये।

युवा समाज सेवी श्री कानोड़िया 1998-99, 99-2000 में चेम्बर के कार्यकारिणी सदस्य भी निर्वाचित हुए एवं 99-2000 में चेम्बर की विधि-व्यवस्था उपसमिति के चेयरमैन भी रहे।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

जूनागढ़ - कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर सम्पन्न

4 दिसम्बर 06। युवा मंच की बौद्ध शाखा की ओर से शाखा सभापति श्री विजय कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में दिनांक 1 दिसम्बर से 4 दिसम्बर-06 तक चार दिवसीय कृत्रिम अंक प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन स्थानीय टाउनहॉल में किया गया जिसमें 80 अपंगों को कैलीपर एवं 20 अपंगों को हाथ-पैर दिया गया।

ताऊ शेखावाटी को साहित्य सेवा सम्मान

श्रीमती बेला बाई ट्रस्ट, मुंबई द्वारा जाने-माने कवि एवं साहित्यकार ताऊ शेखावाटी को उनकी राजस्थानी भाषा सेवा एवं विशेषकर उनकी प्रकाशनाधीन कृति 'हम्मीर महाकाव्य' की पांडुलिपि की श्रेष्ठता के आधार पर कमल एम. मुरारका साहित्य सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप ताऊ को 51 हजार की राशि एवं शॉल तथा सम्मान पत्र भेंट किए गए।

डॉ. नित्यानन्द को वर्ष 2007 ई. का विवेकानंद सम्मान

1 जनवरी। कोलकाता की सुप्रसिद्ध साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था **श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय** द्वारा प्रवर्त्तित 'विवेकानंद सेवा सम्मान' का 21वां सम्मान उत्तरकाशी क्षेत्र के समग्र विकास तथा दैवी आपदाओं से पीड़ित समाज के पुनर्वास हेतु समर्पित समाजसेवी, लेखक एवं चिन्तक डा. नित्यानंद (उत्तराखण्ड) को आगामी रविवार 28 जनवरी 2007 को महाजाति सदन में प्रदान किया जायेगा। सम्मान-स्वरूप 51,000) रु. की नगद राशि एवं मानपत्र दिया जायेगा। गत वर्ष यह सम्मान मेघालय के डा. विश्वमित्र को समर्पित किया गया था।

कुमारसभा पुस्तकालय ने सन् 1987 में पूज्यपाद स्वामी विवेकानंद की 125वीं जयन्ती के अवसर पर स्वामी जी के आदर्शों के अनुसार समाज सेवा, संगठन एवं सामाजिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित व्यक्तियों/संस्थाओं हेतु इस वार्षिक सम्मान का प्रवर्तन किया था।

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

Estd. 1935

Telegram : APAKASAMAJ
Phone : 033 - 2268 0319
Fax : 033 - 2225 1866
033 - 2289 5401

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007

संख्या : .....

दिनांक : .....

राष्ट्रीय महामंत्री,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२बी, महात्मा गांधी रोड,
कोलकाता - ७०० ००७

फोटो | फोटो

महोदय,

मैं सम्मेलन का सदस्य बनना चाहता / चाहती हूँ और इस हेतु निम्नलिखित शुल्क का चेक / ड्राफ्ट / मनीऑर्डर / नगद भेज रहा / रही हूँ।

आजीवन शुल्क रू. ५,०००/-, साधारण विशिष्ट सदस्य शुल्क रू. ५००/- प्रतिवर्ष है। (आजीवन व साधारण विशिष्ट सदस्यों को हर माह समाज विकास निःशुल्क भेजा जाता है।)

संलग्न : दो पासपोर्ट साईज फोटो।

हस्ताक्षर

नाम : .....

पिता/पति का नाम : .....

शिक्षा : .....व्यवसाय..... रक्त ग्रुप.....

जन्मतिथि : ..... विवाह तिथि : ..... पैतृक गाँव : .....

विवाहित / अविवाहित : ..... पत्नी/पति का नाम : .....

कार्यालय का पता :

.....

.....

..... पिन कोड : .....

टेलीफोन नं. (कोड) : ..... मोबाईल नं. : .....

फैक्स : ..... ई-मेल : .....

निवास का पता :

.....

.....

..... पिन कोड : .....

टेलीफोन नं. (कोड) : ..... मोबाईल नं. : .....

फैक्स : ..... ई-मेल : .....

सदस्य बनाने वाले का नाम : ..... सदस्य संख्या : .....

*** (पत्राचार कार्यालय/निवास के पते पर करें)*

कार्यालय हेतु :

If you donot receive Pucca Receipt within one month, please intimate General Secretary.

स्वतंत्रता सेनानी सत्यनारायण चौधरी का निधन

पुरुलिया, 24 जनवरी। सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री सत्यनारायण चौधरी का पुरुलिया में निधन हो गया। वे 96 वर्ष के थे। देश के स्वतंत्रता संग्राम में श्री चौधरी ने एकाधिक बार जेल यात्रा की एवं ब्रिटिश राज ने उन्हें कई बार यातनायें दी। आजादी के आंदोलन में उन्होंने पुरुलिया का नाम रौशन किया। स्व. चौधरी राजेन्द्र बाबू के अन्यतम सहयोगियों में से थे। आजीवन गांधीवादी सरल जीवन बिताने वाले श्री चौधरी यहां की मारवाड़ी समाज के भी स्तंभ थे। विगत 13 जनवरी को जब उनका निधन हुआ तो उनके अंतिम दर्शन हेतु हजारों लोग जिनमें सभी धर्म एवं जाति के लोग थे, उमड़ पड़े। श्री चौधरी को पांच वर्ष पूर्व प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन में देश स समाज की सेवा हेतु उन्हें सम्मानित भी किया गया था। स्व. चौधरी की शवयात्रा में शामिल होकर पुरुलिया के पौर पिता श्री विनायक भट्टाचार्य, जिला शासक श्री देवव्रत बंदोपाध्याय, कांग्रेस के नेता श्री तारकेश्वर चटर्जी, विशिष्ट समाजसेवी श्री रामेश्वर मुंधड़ा, श्री गोकुलचन्द राठी, पार्षद श्री संदीप गोस्वामी, श्री नन्दलाल सरावगी ने पुरुलिया के इस महापुरुष को अश्रुपूर्ण विदाई दी। अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं उपाध्यक्ष श्री विश्वम्भर नेवर ने स्व. सत्यनारायण चौधरी के निधन को राष्ट्र की अपूरणीय क्षति बताया एवं पुरुलिया में उनका स्मारक बनाने की घोषणा की।

विष्णुलाल कानोड़िया का निधन

विष्णुलाल कानोड़िया सुपुत्र स्व. महादेवलाल कानोड़िया का स्वर्गवाश वसंत पंचमी दिनांक २३ जनवरी २००७ को हो गया। आपका जन्म २ दिसम्बर १९२३ को हुआ था। श्री संतोष कानोड़िया इनके पुत्र हैं। अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। हावड़ा में सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में आपकी अच्छी पहचान थी।

इण रा पूत–सपूत कमाऊ

इण रा पूत-सपूत कमाऊ
धोरा-धोरा है उपजाऊ
बिड़ला बांगड़ बजाज बाणियां
सेठ डालमियां अर सिंघाणियां
पारस है मित्तल पश्चिम को
जय-जयकार करै सा दुनियां
कैर सांगरी हाली माटी
निबजे कुबेर सरीका साहू॥ इन रा.....
माँ को कर्ज चुकावै सादर
परम वीर पीरू सिंह भादर
शेखावाटी वीर सूरमा
रण सूं रिडमल पावै आदर
रजपूती तलवार तेग आ
हीरा पन्ना री मूठ जडाऊ॥ इण रा.....
जान कवी नवाब फतेहपुर
मेहन्दी हसन जग-जाहिर सुर
गांव चितेरा भूर सिंह जी
बड़जात्या जाण्या फिल्मी गुर
राख बाजरी की राखी है
भरत व्यास जी फिल्म तिराऊ॥ इण रा.....
महामहिम सूं महिमा मण्डित
शिल्प शिरोमणि माला पण्डित
कलम कार की कलम उजागर
माधव, जांगिड, शारद कल्पित
देश दिसावर नाम कमायो
नागराज विमलेश हँसाऊ॥ इण रा.....
साहित में सरनाम सेठिया
पुजित किरपा रामजी खिडिया
गीत कल्याण सिंह राजावत का
सुध-बुध भूल सुणे है रसिया
दबी राख चिणगारी प्रगटे
ताऊ सीताराम टिकाऊ।
इण रा पूत सपूत कमाऊ।
धोरा-धोरा है उपजाऊ॥

—आर. सी. गोपाल

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication- 29th January 2007
RNI Regd. No . 2868/68

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७०००७

फोन - २२६८-०३१९

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To,